हिन्दी दैनिक

जौनपुर, लखनऊ व भदोहीं से प्रकाशित

देश की उपासना

www.Deshkiupasana.com
www.Deshkiupasana.in
www.Deshkiupasana.org

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

NEWS

dku live & dkunews24

वर्ष : 04 अंक–138 : जौनपुर, मंगलवार 19 जुलाई 2022 सान्ध्य दैनिक (संस्करण) पेज –4 मूल्य : 2 रूपया

यूपी कैबिनेट ने मुख्यमंत्री फेलोशिप योजना को दी मंजूरी : 100 शोधार्थियों को हर महीने मिलेंगे 20 हजार रुपये

लखनऊ ब्यूरो : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में मंगलवार को हुई कैबिनेट बैठक में मुख्यमंत्री फेलोशिप योजना को मंजूरी दे दी गई है। इसके तहत 100 महत्वाकांक्षी विकास खण्डों के 100 शोधार्थियों को 20 हजार रुपये प्रतिमाह की दर से फेलोशिप दी जाएगी। उन्हें एक टैबलेट भी दिया जाएगा। बैठक में 18 नई नगर पंचायतों के गठन को भी मंजूरी दे दी गई है। इसके अलावा, लालगंज, प्रतापगढ़, मानिकपुर, भगवंत नगर, उन्नाव, मलिहाबाद, लखनऊ, रायबरेली, अमरोहा नगर पालिका परिषद का सीमा विस्तार करने का निर्णय लिया गया। बैठक में कुल 55 प्रस्तावों को मंजूरी दी गई है। बुंदेलखंड के सभी विकास खंड में प्राकृतिक खेती की जाएगी। 68 करोड़ 83 लाख रुपये का व्यय आएगा। – 20 नगर निकायों की सीमा का विस्तार होगा। बुंदेलखंड के 7 जिलों के 47 विकास खंडों में प्राकृतिक खेती की अनुमति दी गई है जिसमें करीब 68.83 करोड़ रुपये का खर्च आएगा। पहले चरण में 235 क्लस्टर होंगे। दूसरे चरण में भी 235 क्लस्टर होंगे। 50 हेक्टेअर का एक क्लस्टर होगा। जिन किसानों के पास गाय है या जो गौशाला से गाय ले जाएंगे उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी। ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के लिए श्रम विभाग के नियमों में बदलाव किया गया है। बॉयलर सेक्शन में दो साल की सजा खत्म कर दी गई है। अब सिर्फ 1 लाख रुपये का जुर्माना रहेगा। प्रदेश की अर्थव्यवस्था को एक

ट्रिलियन की बनाने के लिए कंसल्टेंट चयन को मंजूरी मिल गई है। इसके तहत डेलॉयट का चयन किया गया है। 120 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। प्रदेश के लिए पांच साल का विजन डॉक्यूमेंट तैयार किया जाएगा। गृह विभाग के लिए 125 नए वाहन खरीदे जाएंगे। जिला पंचायत अध्यक्ष, क्षेत्र पंचायत अध्यक्ष और अधिकारियों की कंटेजेसी निधि बढ़ेगी। 5000 से 25 हजार और 2500 से 5 हजार किया गया है। 9 राजकीय कॉलेजों को कांस्टीट्यूट कालेज के रूप में चलाने की अनुमति। मेरठ, बुंदेलखंड, चित्रकूट, बरेली, आगरा विवि एवं लखनऊ विव से संबद्ध होंगे। प्रदेश में चार कामर्शियल कोर्ट खुलेंगे। जो कि मेरठ, आगरा, लखनऊ और नोएडा में होंगे। 13 पहले से ही मौजूद हैं। बैठक में मेट्रो विश्वविद्यालय ग्रेटर नोएडा व केएम विश्वविद्यालय मथुरा के लिए आशय पत्र जारी किया गया है। सम्राट पृथ्वीराज को टैक्स फ्री करने के लिये कार्येतर स्वीकृति।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली में अनियमितता पाये जाने पर राशन की दुकान निलंबित

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : सार्वजनिक वितरण प्रणाली में अनियमितता पाये जाने के आरोप में जिलाधिकारी मनीष वर्मा ने क्षेत्र के सरायगुंजा गांव की कोटे की दुकान को निलंबित कर दिया है। पूर्ति निरीक्षक विजय कुमार साहनी ने बताया कि उनके द्वारा 13 जुलाई को रुटीन निरीक्षण सरायगुंजा की कोटे की दुकान का किया गया था। जहां कार्डधारकों द्वारा बताया गया कि कोटेदार सुचित्रा देवी द्वारा वितरण में घटतौली की जाती है। जब इसकी जांच की गई तो मामला सही पाया गया। प्रकरण को गंभीरता से लेते हुए पूर्ति निरीक्षक साहनी ने जांच रिपोर्ट जिला पूर्ति अधिकारी को भेजा था। जिला पूर्ति अधिकारी ने संस्तुति करते हुए निलंबन की रिपोर्ट जिला अधिकारी को भेजा था! जिलाधिकारी ने दुकान को निलंबित कर दिया है। सरायगुंजा के कोटे की निलंबित दुकान को चन्दापुर के कोटेदार के यहाँ सम्बध्ध किया गया है!

कार्य में गुड़वक्ता न होने पर खण्ड विकास अधिकारी ने सचिव को लगाई फटकार

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : बरसठी क्षेत्र के हरद्वारी गांव में ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन (एसएलडब्लूएम)के हो रहे कार्य की जांच करने खण्ड विकास अधिकारी प्रवीण कुमार त्रिपाठी पहुँचे।निर्माण कार्य गुणवत्ताविहीन देख खण्ड विकास अधिकारी ने नाराजगी जाहिर करते हुए ग्राम पंचायत अधिकारी को एक सप्ताह में ठीक कराने का निर्देश दिया। बीडीओ ने कहा कि कार्य सही न होने पर सम्बन्धित के खिलाफ कार्यवाही की जाएगी। गांव के हर घर से पानी निकासी के लिये एसएलडब्लूएम योजना के तहत गांव में अंडरग्राउंड पाइप लाइन बिछाने का कार्य किया जा रहा है।कार्य का निरीक्षण करने के लिए जब बरसठी बीडीओ प्रवीण कुमार त्रिपाठी गांव में पहुँचे तो उन्होंने निरीक्षण में पाया कि ग्राम पंचायत में कराए जाने वाले इस कार्य मे गुणवत्ता नही थी।बीडीओ ने बताया कि बिछाए जाने वाले पाइप का लेवल सही नही था, इसके साथ ही दो पाइप की ज्वाइंट में भी गड़बड़ी रही।जगह जगह बनने वाले चौंबर भी ठीक से नही बनाया गया था ,बीडीओ ने ठीक से काम न कराने पर नाराजगी जाहिर करते हुए पूर्व सचिव अरुण पटेल को फटकार लगाया,और एक सप्ताह में उसे ठीक करने का निर्देश दिया।

बूँद–बूँद जल का संरक्षण समय की आवश्यकता–स्वतंत्र देव सिंह

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ। भूगर्भ जल संरक्षण सप्ताह के अंतर्गत सेंट जोसेफ समूह में जन–जागरूकता के उद्देश्य से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सेंट जोसेफ की शारदा नगर, रुचि खंड शाखा में अंर्तशाखा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । जिसमें बच्चों ने जल के संरक्षण की शपथ लेकर पानी के बूंद बूंद संरक्षण पर आधारित पोस्टर मेंकिग, भाषण प्रतियोगिता तथा स्लोगन राइटिंग आदि में प्रतिभाग किया। साथ ही भूजल संरक्षण का संदेश भी दिया। इस अवसर पर जल शक्ति मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार स्वतंत्र देव सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में बताया कि भूगर्भ जल संरक्षण जन–जागरूकता अभियान पूरे प्रदेश में चलाया जा रहा है जिसमे जन जागरूकता के माध्यम से भूजल के स्तर को बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। स्कूली बच्चे ही इस जागरूकता अभियान के ब्रांड एम्बेसडर है। इसके पूर्व कार्यक्रम का परंपरागत रूप से शुभारंभ मुख्य अतिथि स्वतंत्रदेव सिंह के साथ समूह के प्रबन्ध निदेशक अनिल अग्रवाल के साथ स्क्वाड्रन लीडर राखी अग्रवाल सेवा निवृत ने दीप प्रज्जवलन करके किया। साथ ही मुख्य अतिथि को अंग वस्त्र, बुके व मोमेन्टो प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर भूजल संरक्षण पर आयाजित अर्न्तशाखा स्लोगन राइटिंग, पोस्टर मेकिंग व भाषण प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह द्वारा पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम

में निदेशक भूगर्भ जल विभाग, उत्तर प्रदेश, वी0के0 उपाध्याय ने उपस्थित बच्चो को जल संचयन के क्षेत्र में सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासों के बारे में बताया वही अधिशासी अभियंता, भूगर्भ जल विभाग, अनुपम ने प्रदेश में भूगर्भ जल की स्थिति के बारे में बताया। कार्यक्रम के अंत में सेंट जोसेफ समूह के प्रबंध निदेशक एवं अनएडेड प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन अध्यक्ष अनिल अग्रवाल ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जल ही जीवन है इसे बचाना प्रत्येक नागरिक का प्रथम कर्तव्य है। भूजल संरक्षण के माध्यम से ही धरती पर खुशहाली आ सकती है। इस अवसर पर सेंट जोसेफ की सभी शाखाओं के प्रधानाचार्य, शिक्षक व विद्यार्थी उपस्थित थे।

जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में भूगर्भ जल सप्ताह कार्यक्रम आयोजन के सम्बन्ध में बैठक सम्पन्न

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में भूगर्भ जल सप्ताह कार्यक्रम आयोजन के सम्बन्ध में बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि किसान भाई पानी की बचत करें, फसलों की सिंचाई क्यारी बनाकर करें, सिंचाई की नालियों को पक्का करें या कैनवासध्पी0वी0सी0 पाइप का प्रयोग करें, बागवानी की सिंचाई हेतु ड्रिप विधि व फसलों हेतु स्प्रिंकलर विधि अपनाएं, पेड़ पौधों की फसलों की सिंचाई आदि में आवश्यकतानुसार ही पानी का प्रयोग करें, बगीचे में पानी सुबह ही दे ताकि वाष्पीकरण से होने वाला नुकसान कम किया जा सके। जल की कमी वाले क्षेत्रों में ऐसी फसलें बोयें जिसमें कम पानी की आवश्यकता हो, अत्याधिक भूजल गिरावट वाले क्षेत्रों में फसल चक्र में परिवर्तन कर अधिक जल खपत वाली फसलें न उगाई जाए। खेतों की मेड़ों को मजबूत व ऊँचा करके खेत का पानी खेत में रिचार्ज होने दे। जिलाधिकारी ने कहा उद्योगोंध व्यवसायिक क्षेत्रों में भी जल की बचत करें, जिसमें औद्योगिक प्रयोग में लाए गए जल का शोधन करके उसका पुनः उपयोग करें, मोटर गैराज में गाड़ियों की धुलाई से निकले जल की सफाई करके पुनः प्रयोग में लाएं। वाटर पार्क तथा होटल में प्रयुक्त होने वाले जल का उपचार करके बार बार प्रयोग में लाएं। होटल, निजी अस्पताल, नर्सिंग होम व उद्योग आदि वर्षा जल का संग्रहण कर टॉयलेट व गार्डेनिंग में उस पानी का प्रयोग करें तथा उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों के लिए वर्षा जल संचय की उपयुक्त तकनीकें जैसे – तालाब, जलाशय, नए तालाबों का निर्माण, पुराने तालाबों का जीर्णोद्धार, गलीध्नाला, प्लगिंग, रिचार्ज कूप, फालतू जल हेतु रिचार्ज पिट आदि उपयोग जल संचय हेतु करें। जिलाधिकारी ने कहा कि जलसंरक्षण के कार्यों का ही परिणाम है कि आज जनपद में मात्र दो विकास खंड ही क्रिटिकल श्रेणी में रह गए हैं परंतु हम सभी को अभी भी लगातार उत्साह पूर्वक कार्य करने की आवश्यकता है। अतः हम सभी को जनमानस में जागृत करते हुए दुगनी लगन से कार्य करने की आवश्यकता है। जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि रोजमर्रा के घरेलू कार्यों में जल की बचत करें, दंत मंजन करते, दाढ़ी बनाते समय नलोध्टोटी को कम से कम खोलें और मग का इस्तेमाल करें, बर्तनों को माजते समय नल बंद रखें, जब धुलाई करनी हो तब यह नल को खोलें, जल की धार हमेशा धीमी रखें और टपकते नलों को तुरंत ठीक कराएं। गाड़ी की धुलाई पाइप लगाकर न करें, बल्कि बाल्टी में पानी

लेकर गाड़ी साफ करें, घर के आगे की सड़कों को अनावश्यक पानी से न धोए। सार्वजनिक नलों में लीकेज देखें तो उसकी शिकायत जल संस्थान को करें। कम पानी की खपत वाली फलश सिस्टम का प्रयोग करें, इससे 10 लीटर पानी बचेगा, रसोई में ताजा पानी भरने की प्रवृत्ति छोड़ संग्रहित पानी का पूरा इस्तेमाल करें, पानी की टंकी में वाल्व अवश्य लगाएं और पानी को ओवरफ्लो न कराएं, घर के सदस्यों को पानी बचाने की शिक्षा जरूर दें। ध्यान रखें कि अनावश्यक जल की बर्बादी अथवा टपकना एवं ऋणात्मक ऊर्जा उत्पन्न करता है, जो आपके मन में मस्तिष्क को भी प्रभावित करता है, जल, उर्जा एवं धन की बचत का आशय है कि उसे दूसरों के हित में साधन में लगाना चाहिए। जिलाधिकारी द्वारा यह निर्देश दिए गए कि जनपद में जिला स्तर, तहसील स्तर, नगर निकाय, खंड स्तर पर संबंधित विभाग शासन द्वारा नियत कार्य योजना के तहत जन सम्मान की अधिकाधिक भागीदारी सुनिश्चित कराते हुए भूजल सप्ताह का सफल आयोजन करें। गोष्ठी में मुख्य विकास अधिकारी सीलम साई तेजा ने बताया कि प्रदेश में गिरते भूजल स्तर को दृष्टिगत रखते हुए भूगर्भ जल सप्ताह के महत्व के प्रति जन जागरूकता सृजित करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 16 जुलाई से 22 जुलाई 2022 के मध्य भूजल सप्ताह मनाया जा रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि जल संरक्षण के साथ–साथ जल के अपव्यय को रोककर हम सभी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। अधिशासी अभियंता लघु सिंचाई संदीप कुमार द्वारा भूजल सप्ताह की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता बताएं गये। उन्होंने जल संरक्षण की दिशा में जनपद में कराए जा रहे कार्यों से प्राप्त सकारात्मक परिणाम के बारे में भी बताया। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 लक्ष्मी सिंह, जिला पंचायत राज अधिकारी, बेसिक शिक्षा अधिकारी सहित अन्य अधिकारीध्कर्मचारी उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में संचारी रोग नियंत्रण एवं दस्तक अभियान के सफल आयोजन हेतु बैठक संपन्न

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट स्थित सभागार में विशेष संचारी रोग नियंत्रण एवं दस्तक अभियान के सफल आयोजन हेतु अधिकारियों के साथ बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने बताया कि जनपद में एक 01 से 31 जुलाई तक संचारी रोग नियंत्रण अभियान तथा 16 से 31 जुलाई तक दस्तक अभियान चलाया जा रहा है। इसके संदर्भ में जिलाधिकारी द्वारा विभिन्न विभागों के द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा की और निर्देश दिया कि जो भी लक्ष्य दिए गए हैं उसे शत–प्रतिशत पूर्ण कराएं। जिला पंचायत राज अधिकारी के द्वारा किए गए कार्यों के प्रति नाराजगी व्यक्त करते हुए निर्देशित किया कि गांव में अभियान चलाकर झाड़ी कटान, हैंडपंप रिपेयर, हैंडपंप, प्लेटफार्म रिपेयर, एंटिलार्वाध्फॉगिंग कार्यवाही, ग्रामीण क्षेत्रो में नालियो की सफाई का कार्य प्रमुखता से और प्रभावी ढंग से कराया जाए। इसमे ग्राम प्रधानों का सहयोग लिया जाए। बैठक में जिलाधिकारी ने संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि संचारी रोग नियंत्रणध्दस्तक अभियान को पूरी गंभीरता से लेते हुए संपन्न कराएं। इसी प्रकार अन्य सहयोगी विभागों तथा नगर विकास विभाग द्वारा वार्डों में फागिंग, लार्वा साइडल छिड़काव व कूड़ा उठान, नाला नालियों की सफाई कराई जाएगी। कृषि एवं सिंचाई विभाग द्वारा जमे हुए पानी में मच्छरों के प्रजनन को रोकना तथा सिंचाई के वैकल्पिक उपायों पर अपनी तकनीकी सलाह देना, मच्छर रोधी पौधों का उगाया जाना, नहरो तथा तालाबों के किनारे उगी वनस्पतियों को प्रत्येक पखवाड़े से हटाना, खेतों में मच्छरों के

प्रजनन को रोकने, पशुपालन विभाग द्वारा सूअर पालकों को कम करने हेतु नई तकनीकों के प्रयोगों में मदद उपलब्ध कराने को कहा गया। महिला एवं बाल विकास द्वारा अति कुपोषित बच्चों को पोषण पुर्नवास केंद्र पर संदर्भित करना, जिला उद्यान विभाग द्वारा मच्छर विकर्षी पौधों का रोपण से सम्बंधित कार्य प्रभावी ढंग से कराए जाने के निर्देश दिए गए। जिलाधिकारी ने समस्त संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि फील्ड में जाकर स्वयं कार्य की गुणवत्ता एवं धरातलीय हकीकत को देखेंगे और शत–प्रतिशत कार्य करवाना सुनिश्चित करेंगे। इस कार्य मे किसी प्रकार की लापरवाही पाये जाने पर संबंधित अधिकारी का उत्तरदायित्व निर्धारित करते हुए उसके खिलाफ कार्यवाही भी की जाएगी। बैठक में उपस्थित नगरपालिकाध्नगर पंचायत के अधिकारियों को निर्देशित किया कि शहरी क्षेत्रों में सभी नाले, नालियो की सफाई सुनिश्चित करवा ली जाए, कही भी जल भराव की स्थिति नही पैदा होनी चाहिए। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, जिला पंचायत राज अधिकारी, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका तथा अन्य सहयोगी विभागो के जनपद स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

आवश्यक सूचना

आप सभी पाठक बन्धुओं से अनुरोध है कि आनलाइन समाचार पत्र पढ़नें और ई–पेपर का लाभ लेने हेतु हमारे निम्नांकित वेबसाइट एवं न्यूज पोर्टल - **dku live** चैनल पर सम्पर्क कर लाभ उठायें– उ0प्र0 के सभी जनपदों एवं तहसीलों से पत्रकार बननें के लिए सम्पर्क करें–

www.Deshkiupasana.com
www.Deshkiupasana.in
www.Deshkiupasana.org

–संपादक

अग्रहरि समाज ने चलाया पौधरोपण अभियान

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : जौनपुर में पर्यावरण दिवस के तहत अग्रहरि समाज जौनपुर के जिला अध्यक्ष मनोज अग्रहरि के नेतृत्व शिवगुलामगंज में 101 छायादार एवं फलदार पेड़ लगाकर बताया कि वृक्ष लगाने का पहला और सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि वे कार्बन डाइऑक्साइड और श्वास ऑक्सीजन का आदान–प्रदान करते हैं। पर्यावरण

में ऑक्सीजन की जरूरत सभी को ज्ञात है। पेड़ों न केवल कार्बन डाइऑक्साइड लेते हैं बल्कि वातावरण से कई अन्य हानिकारक गैसों को भी अवशोषित करते हैं जिससे वातावरण को ताजगी मिलती है। और यह भी कहा कि यह कार्य निरंतर चलता ही रहेगा इस अवसर पर समाज के संयोजक कार्यकारी जिला अध्यक्ष विनोद अग्रहरि ने कहा कि वृक्ष है तो जीवन है वृक्ष के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती सभी नागरिकों कि जिम्मेदारी होती है कि वह पौधारोपण करने के साथ–साथ उसका पूरा देखभाल और सुरक्षा भी करता रहे! जिला उपाध्यक्ष प्रवीण कुमार अग्रहरी जिला कोषाध्यक्ष मुकेश अग्रहरी पूर्व युवा प्रदेश अध्यक्ष संतोष अग्रहरी ने कहा एक पेड़ लगाने से असंख्य जीव–जन्तुओं के जीवन का उद्धार होता है और उसका अपार पुण्य सहजता से हासिल होता है। एक तरह से पेड़ लगाने से अपार पुण्य की प्राप्ति होती है। भारतीय संस्कृति में भी वृक्षारोपण को अति पुण्यदायी माना गया है। शास्त्रों में लिखा गया है कि एक पेड़ लगाने से एक यज्ञ के बराबर पुण्य मिलता हैयुवा जिला अध्यक्ष डी के अग्रहरी ने कहा सभी समाज के लोगो को अपनी सुविधा अनुसार अपने–अपने बगीचा, फार्म हाउस, गोदाम, घर जहां भी उचित स्थान है पेड़–पौधा अवश्य लगाना चाहिए इससे मानव जीवन सुरक्षित होता है सुशील अग्रहरि विक्रम अग्रहरी जी शैलेंद्र अग्रहरी आलोक कुमार अग्रहरी रूपेश कुमार अग्रहरी सतीश कुमार अग्रहरी वीरेंद्र गिरी भोलानाथ अग्रहरी सत्येंद्र गिरी रंजीत अग्रहरी ओम सेन अग्रहरी संजय अग्रहरी मनीष अग्रहरि राहुल अग्रहरि संदेश अग्रहरी आदि लोग उपस्थित रहे अंत में महामंत्री रविंद्र अग्रहरी ने सभी को धन्यवाद किया अभिवादन किया।

एंबुलेंस मे ही ईएमटी विमल कुमार ने सुरक्षित प्रसव कराया

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ। गाड़ी संख्या UP 32 EG 0579 के ईएमटी विमल कुमार चालक महेश यादव के सहयोग से एंबुलेंस में सुरक्षित प्रसव कराया गया फरहीन पब्लिक स्कूल प्रेम नगर दुबग्गा से

बब्लू ने 102एंबुलेंस पर कॉल किया जिसकी सूचना मिलने पर एंबुलेंस लोकबंधु हॉस्पिटल आशियाना से प्रेमनगर दुबग्गा पहुंचती हैं और मरीज को हॉस्पिटल लेकर जाते समय प्रसव पीड़ा तेज होने पर ईएमटी विमल कुमार ने पायलट महेश यादव से गाड़ी को रोड के किनारे खड़ी करने कहा फिर एंबुलेंस मे ही ईएमटी विमल कुमार सुरक्षित प्रसव कराया। महिला को वीरांगना अवंती बाई हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया।

facebook YouTube WhatsApp twitter Instagram

–सुविचार–

मुस्कान से सम्स्या सुलझ सकती है लेकिन मौन से आनें वाली समस्या को रोक सकते हैं।

–साभार ज्ञानामृत पत्रिका

सम्पादकीय

मानसून सत्र : जनता के सवालों पर बहस कब

सांसदों को एमएसएमई को दिए जाने वाले ऋण परिदृश्य पर एक श्वेत पत्र की मांग करनी चाहिए। शुरू में वे इस पर सरकार से जवाब मांग सकते हैं कि औपचारिक संस्थागत ऋण तक कितने पंजीकृत एमएसएमई की पहुंच है।

रोमानियाई–फ्रांसीसी विचारक एवं नाटककार यूजीन इओनेस्को ने कहा था कि जवाब नहीं, बल्कि सवाल हमारे मन को आलोकित करता है। हालांकि ज्ञानोदय का वादा इस बात पर निर्भर करता है कि प्रश्न पूछे जाते हैं या नहीं। संसद का मानसून सत्र प्रारंभ हो चुका है। सैद्धांतिक रूप से संसद–सत्र के दौरान सांसद सरकार का ध्यान उन लोगों की चिंताओं की ओर दिलाते हैं, जो उन्हें अपना प्रतिनिधि चुनते हैं।

लेकिन व्यावहारिक तौर पर सांसदों का ध्यान ज्यादातर दलगत राजनीति पर रहता है और अपने मतदाताओं को परेशान करने वाली चिंताओं पर उनका ध्यान कम रहता है। करदाताओं के करोड़ों रुपये खर्च कर चलने वाली संसदीय प्रक्रिया तेजी से कटु बयानबाजी के अवसर में तब्दील हो गई है। क्या मौजूदा सत्र में सांसद जनता के सवालों पर कुछ समय खर्च करेंगे? जनता को परेशान करने वाले और उनके जीवन एवं जीविका को प्रभावित करने वाले मुद्दों की एक लंबी सूची है।

यहां उनमें से कुछ मुद्दों का जिक्र किया जा रहा है, जिन्हें सांसद शासन की स्थिति की वास्तविक तस्वीर जानने के लिए उठा सकते हैं। मानसून अपने साथ पूर्वानुमानित तस्वीरें लेकर आया है। असम से लेकर गुजरात और उत्तराखंड से लेकर तमिलनाडु तक, राज्य दर राज्य बाढ़ ने शहरों और कस्बों में तबाही मचाई है। उल्लेखनीय है कि इनमें से कई शहर स्मार्ट शहरों की सूची में है। पुणे 50 मिलीमीटर से ज्यादा बारिश नहीं झेल सका।

गौरतलब है कि अक्सर शासन की विफलताओं को जलवायु परिवर्तन के व्यापक बहाने के तहत दफन कर दिया जाता है और श्अभूतपूर्वश कहकर उसकी भीषणता बताई जाती है। स्मार्ट सिटी की कहानी अपने आप में व्यापक अध्ययन का विषय है। फिलहाल सांसद पूछ सकते हैं कि इस पर कितनी राशि खर्च की गई है और क्या इस कार्यक्रम में आपदा से निपटने के लिए कोई खाका या आवंटन है।

समय आ गया है कि सांसद सरकार को शहरों के अध्ययन का सुझाव दें, ताकि कस्बों, शहरों और राज्यों में पानी की कमी और अधिकता की संवेदनशीलता का मानचित्रण किया जा सके! महामारी ने जीवन, जीविका और बच्चों की शिक्षा को काफी नुकसान पहुंचाया है। 15 लाख से ज्यादा स्कूलों के 24.7 करोड़ छात्र इससे प्रभावित हुए, क्योंकि स्कूल 18 महीने से ज्यादा समय तक बंद रहे। एएसईआर (असर) की 2021 की रिपोर्ट के अनुसार, छह से 14 वर्ष के 4.6 फीसदी बच्चे स्कूलों से बाहर पाए गए।

यह सच है कि शिक्षा राज्य का विषय है, लेकिन बच्चों के स्कूल छोड़ने के निहितार्थ राष्ट्रीय हैं। आदर्श रूप में यूडीआईएसई (भारत में स्कूलों के बारे में एक डाटा बेस) के पास इसका उत्तर होना चाहिए, लेकिन आज के डिजिटल शासन के युग में इसकी नवीनतम रिपोर्ट वर्ष 2020द21 की ही है। सांसदों को घोषित कार्यक्रम के आंकड़े और आकलन के बारे में सवाल पूछना चाहिए। कितने बच्चे स्कूल से बाहर हैं? शिक्षकों के खाली पदों का स्तर क्या है?

ऑनलाइन पढ़ाई के लिए इंटरनेट एवं उपकरण तक पहुंच के बारे में क्या विचार है? सुधार के किसी भी मूल्यांकन के लिए आधार की जरूरत होती है। इन पंक्तियों के लेखक ने पहले भी इस कॉलम में बेरोजगारी और खाली पदों के विरोधाभास को उजागर किया था। मोदी सरकार ने हाल ही में सरकारी विभागों में 18 महीने में दस लाख पदों को भरने की घोषणा की है। यह स्वागत योग्य विचार है, लेकिन राज्यों में खाली पदों के बारे में क्या योजना है?

बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और झारखंड जैसे राज्यों में स्वास्थ्य, शिक्षा और पुलिस विभागों में बड़ी संख्या में रिक्त पद हैं। केंद्र सरकार में खाली पदों की संख्या (8.5 लाख से ज्यादा) ज्ञात है, लेकिन राज्यों में खाली पदों की जानकारी नहीं है। सांसदों को राज्य स्तर पर खाली पदों की जानकारी मांगनी चाहिए और उन्हें भरने के लिए दबाव बनाना चाहिए। सांसद राज्य सरकारों को रियायत क्यों दे रहे हैं? एक के बाद एक सामने आने वाली घटनाओं ने राजनीतिक अर्थव्यवस्था की भ्रामक तस्वीरों को और बढ़ा दिया है।

भारत ने हमेशा रोजगार की एक सुसंगत तस्वीर पेश करने के लिए संघर्ष किया है, जबकि इसने 1950 के दशक में आंकड़ा संग्रह करने और उसके विश्लेषण का बीड़ा उठाया था। समय–समय पर किए जाने वाले श्रमबल सर्वेक्षण उत्तर से ज्यादा प्रश्न सामने रखते हैं। सरकारी खर्च से मानव–श्रम घंटों, निजी उद्यमों द्वारा भर्तीध छंटनी, ईपीएफओ नामांकन, ई–श्रम प्लेटफार्म पर पंजीकरण और मनरेगा के रिकॉर्ड पेरोल भुगतान पर आंकड़े हैं, पर सुगम संयोजन नहीं है।

निश्चित रूप से इन्हें फिल्टर करके एक पूर्ण नहीं, तो आंशिक तस्वीर प्राप्त की जा सकती है। रोजगार पर एक विश्वसनीय त्रैमासिक रिपोर्ट के लिए सांसदों को संसद और स्थायी समितियों में अभियान चलाना चाहिए। सूक्ष्म, लघु और मध्यम श्रेणी के उद्यम (एमएसएमई) अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं–जो न सिर्फ रोजगार पैदा करते हैं, बल्कि उत्पादन एवं निर्यात में भी बड़ी भूमिका निभाते हैं। हालांकि कर्ज पाने की उनकी क्षमता व्यवस्थागत पूर्वाग्रह के कारण सीमित है।

श्रम संबंधी स्थायी समिति की अगस्त, 2021 की रिपोर्ट बताती है कि दस में से आठ एमएसएमई के पास संस्थागत ऋण की कमी है। यह सच है कि महामारी के दौरान एमएसएमई को ऋणों के पुनर्गठन योजनाओं के जरिये समर्थन दिया गया था। लेकिन यह भी उतना ही सच है कि जिनके पास बैंक ऋण तक पहुंच नहीं थी, वे बंद हो गए। सांसदों को एमएसएमई को दिए जाने वाले ऋण परिदृश्य पर एक श्वेत पत्र की मांग करनी चाहिए। शुरू में वे इस पर सरकार से जवाब मांग सकते हैं कि औपचारिक संस्थागत ऋण तक कितने पंजीकृत एमएसएमई की पहुंच है।

इसके बाद सभी क्षेत्रों में सूक्ष्म उद्यमों को शामिल कर इसे विस्तृत किया जा सकता है। ये कुछ ऐसे मुद्दे हैं, जिन पर सांसद विचार कर सकते हैं, हालांकि बहुत से अन्य मुद्दे भी हैं। मसलन, नए शहर निर्माण की क्या स्थिति है, कितने राज्यों ने नई श्रम संहिता को अपनाया है, विभिन्न शहरों के बीच कितनी मेट्रो परियोजनाएं निर्धारित हैं, क्या बैंक किसानों को सोलर फार्म्स के लिए कर्ज दे रहे हैं? और भी कई मुद्दे हैं। संसद सत्र राष्ट्र की स्थिति पर बहस एवं विचार करने के लिए बुलाया जाता है। उम्मीद है, और यह केवल एक उम्मीद है, कि मानसून सत्र प्रतिस्पर्धात्मक शोर में नहीं डूबेगा और सांसदों को मतदाताओं का प्रतिनिधित्व करने का समय मिलेगा।

ये लेखक के अपनें विचार हैं।

आम आदमी की संतुष्टि होगी अधिकारियों के प्रदर्शन का मानक : मुख्यमंत्री योगी

गोरखपुर मण्डल प्रभारी आशुतोष चौधरी : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने सोमवार को मंडल, रेंज, जोन और जनपद में तैनात वरिष्ठ प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियों के साथ कांवड़ यात्रा के सुगम व शांतिपूर्ण आयोजन, स्वतंत्रता सप्ताह के सफल आयोजन के सम्बंध में दिशा–निर्देश दिए। वीडियो कॉन्फ्रेसिंग के माध्यम से हुई इस विशेष बैठक में मुख्यमंत्री जी ने आईजीआरएस, जनता दर्शन और सीएम हेल्पलाइन पर प्राप्त शिकायतों के थाना, तहसील व जिला स्तर की रैंकिंग के अनुसार अधिकारियों को कार्यप्रणाली को बेहतर करने के निर्देश भी दिए। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि आम आदमी की संतुष्टि सबसे महत्वपूर्ण है। शासन–प्रशासन से जुड़े सभी अधिकारियों/कार्मिकों को इसे समझना चाहिए। आम आदमी को न्याय पाने का अधिकार है। तहसीलों/प्राधिकरणों आदि जन हित से सीधे जुड़ाव रखने वाले कार्यालयों में हर दिन एक घंटे की अवधि जनसुनवाई के लिए नियत है। इस अवधि में अधिकारी जनता से मिलें, शिकायतें/समस्याएं सुनें और मेरिट पर निस्तारण करें। आईजीआरएस/सीएम हेल्पलाइन जनता की समस्याओं के निदान का अच्छा माध्यम बन कर उभरा है। इसके प्रकरण लंबित न रहें। इनकी हर कार्यालय में सतत समीक्षा होनी चाहिए। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि फील्ड में तैनात अधिकारीध्कर्मचारी जनसमस्याओं के निस्तारण को शीर्ष प्राथमिकता दें। आमजन के साथ संवेदनशील व्यवहार रखें। यह ध्यान रखें कि आपका आचरण आम आदमी के मन में शासन के प्रति विश्वास का आधार बनता है। जनता की संतुष्टि ही आपके प्रदर्शन की श्रेष्ठता का मानक होगा। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि हर व्यक्ति को न्याय पाने का अधिकार है। सोमवार से शनिवार तक जन हित से सीधे जुड़ाव रखने वाले कार्यालयों में हर दिन एक घंटे की अवधि जनसुनवाई के लिए नियत है। इस अवधि में अधिकारी जनता से मिलें, शिकायतेंध समस्याएं सुनें और मेरिट पर निस्तारण करें। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि आईजीआरएसध्सीएम हेल्पलाइन जनता की समस्याओं के निदान का अच्छा माध्यम बन कर उभरा है। इसके प्रकरण लंबित न रहें। इनकी हर कार्यालय में सतत समीक्षा होनी चाहिए। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि प्रत्येक कार्यालय में मूवमेंट रजिस्टर अनिवार्य रूप से रखा जाए, जिसमें कार्यालय से बाहर जाने वाले अधिकारी/कर्मचारी का विवरण रहे। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि फील्ड में तैनात वरिष्ठ अधिकारी तहसील/ब्लॉक/सर्किल का औचक निरीक्षण करते रहें। बेसिक शिक्षा अधिकारी, सीएमओ, डीआईओएस सभी अपने अधीनस्थ कार्यालयों के औचक निरीक्षण करें। हर दिन एक जगह का औचक निरीक्षण जरूर करें। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि अधिकारी फील्ड का नियमित भ्रमण करते हुए क्षेत्र में रात्रि निवास करें। रेंज और जोन स्तर के अधिकारी अलग–अलग जिलों में रात्रि विश्राम करते हुए स्थानीय समस्याओं/संभावनाओं की जानकारी कर आवश्यक कार्यवाही करें। इसी प्रकार, जिलाधिकारी/पुलिस कप्तान माह में कम से कम एक बार अलग–अलग तहसील/सर्किल में बारी–बारी से

रात्रि विश्राम करें। इससे पूरा सिस्टम एक्टिव बना रहेगा। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि जिलाधिकारीध्पुलिस कप्तान स्थानीय जनप्रतिनिधियों से सतत संवाद–संपर्क बनाए रखें। उनके सुझावों पर ध्यान दें। उनके पत्रों का त्वरित निस्तारण किया जाए। फोन रिसीव न कर सकें तो कॉल बैक करें। हर शासकीय अधिकारी को इसका अनुपालन करना होगा। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि पवित्र श्रावण मास के प्रथम सोमवार के विशेष अवसर पर आज प्रदेश के सभी जिलों में आस्था और उत्साह के साथ श्रद्धालुओं ने जलाभिषेक किया। यह हमारी अच्छी तैयारी का ही परिणाम है कि सभी जगह स्थिति शांतिपूर्ण रही। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि लगभग दो वर्ष के अंतराल के बाद इस बार कांवड़ यात्रा आयोजित हो रही है। ऐसे में श्रद्धालुओं का उत्साहित होना स्वाभाविक ही है। बड़ी संख्या में लोग जलाभिषेक के लिए आवागमन कर रहे हैं। कांवड़ यात्रा सुचारू रूप से चल रही है। अमरोहा में एक दुःखद घटना की सूचना भी मिली है। ऐसे में हमें और सावधान–सतर्क रहना होगा। कांवड संघों का पंजीयन करा लिया जाए। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि कांवड़ यात्रा मार्ग पर जगह–जगह हेल्थ पोस्ट स्थापित किए जाएं। हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर भी उपयोगी हो सकते हैं। यहां प्राथमिक चिकित्सा की सुविधा रहे। गर्मी तेज है, ऐसे में मार्ग में पीने के पानी की व्यवस्था भी हो। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि कांवड़ यात्रा की दृष्टि से गाजियाबाद–हरिद्वार मार्ग पर सर्वाधिक व्यस्त रहता है। यहां दूसरे राज्यों के श्रद्धालु भी आते हैं। अतः सीमावर्ती राज्यों से भी संवाद बनाए रखें। इसके साथ–साथ अन्य यात्रा मार्गों पर श्रद्धालुओं की संख्या को देखते हुए ट्रैफिक रूट डायवर्जन भी किया जाना चहिए। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि त्वरित कार्यवाही और संवाद–संपर्क अप्रिय घटनाओं को संभालने में सहायक होती है। ऐसे में किसी भी अप्रिय घटना की सूचना पर बिना विलंब किए, जिलाधिकारी/पुलिस कप्तान खुद मौके पर पहुंचे। संवेदनशील प्रकरणों में वरिष्ठ अधिकारी लीड करें। सेक्टर स्कीम लागू करें। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि शरारती तत्व दूसरे सम्प्रदाय के लोगों को अनावश्यक उत्तेजित करने की कुत्सित प्रयास कर सकते हैं, ऐसे मामलों पर नजर रखें। कांवड़ियों के रात्रि विश्राम के क्षेत्र में सुरक्षा और जनसुविधा के पर्याप्त इंतजाम होने चाहिए। पुलिस बल फुट पेट्रोलिंग करे। पीआरवी 112 एक्टिव रहे। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि सड़क आम–आदमी के आवागमन के लिए है। यातायात बाधित कर सड़कों पर किसी प्रकार के धार्मिक क्रियाकलाप की अनुमति नहीं है। इस सम्बंध में स्पष्ट दिशा–निर्देश दिए जा चुके हैं, जीरो टॉलरेंस के साथ इसका कड़ाई से अनुपालन कराया जाए। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि श्रावण माह में विविध आयोजन भी होंगे। शिवालयों में सामान्य से अधिक लोगों की उपस्थिति होगी। ऐसे में आयोजकों अथवा मंदिर प्रबंधन से पहले से ही संवाद कर लिया जाना चाहिए। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि हर पर्व शांति और सौहार्द के बीच सम्पन्न हों, इसके लिए स्थानीय जरूरतों को देखते हुए सभी जरूरी प्रयास किए जाएं। शरारतपूर्ण बयान जारी करने वालों के साथ जीरो टॉलरेंस की नीति के साथ कड़ाई से पेश आएं। माहौल खराब करने की कोशिश करने वाले अराजक तत्वों के साथ पूरी कठोरता की जाए। ऐसे लोगों के लिए सभ्य समाज में कोई स्थान नहीं होना चाहिए। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि धार्मिक यात्राओंध्जुलूसों में अस्त्र–शस्त्र का प्रदर्शन नहीं होना चाहिए। ऐसी कोई घटना न हो, जिससे दूसरे धर्म के लोगों की भावनाएं आहत हो। जुलूस में परंपरागत वाद्य यंत्र बजाए जा सकते हैं। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि थाना, सर्किल, जिला, रेंज, जोन, मंडल स्तर पर तैनात वरिष्ठ अधिकारीगण अपने–अपने क्षेत्र के धर्मगुरुओं, समाज के अन्य प्रतिष्ठित जनों के साथ संवाद बनाएं। लोगों के लिए सकारात्मक संदेश जारी कराएं। पीस कमेटी की बैठक कर लें। मीडिया का सहयोग लें, ताकि शांति और सौहार्द का माहौल बना रहे। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि लोकतंत्र में संवाद का बड़ा महत्व है। संवाद के माध्यम से ही हमने अनावश्यक रूप से लगाये गए माइक को हटाने में सफलता पाई है। हर प्रकरण में इसी प्रकार संवाद–संपर्क के माध्यम से समस्याओं का निस्तारण करें।

मारो फिरंगियों को नारा देने वाले शहीद मंगल पांडे जी के जन्म दिवस पर दी गई पुष्पांजलि : खोसला

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ। दिल्ली प्रदेश नेशनल पैंथर्स पार्टी के अध्यक्ष राजीव जोली खोसला ने अमर शहीद मंगल पांडे जी को के जन्मदिवस पर पुष्पांजलि देते हुए कहा कि किस प्रकार अंग्रेजी हकूमत का विद्रोह की शुरुआत करें मंगल पांडे जी ने सभी भारतीयों से निवेदन है कि वह क्रांतिकारी वीरों के दिखाए हुए मार्ग पर चलें भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए अंग्रेजों के खिलाफ सिर उठाने वाले भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पहले क्रांतिकारी के तौर पर विख्यात मंगल पांडे ने पहली बार श्मारो फिरंगी कोश का नारा देकर भारतीयों का हौसला बढ़ाया था। उनके विद्रोह से ही प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत हुई थी। आज (19 जुलाई2022) उनकी 195वीं जयंती है। 29 मार्च 1857 को मंगल पांडे ने अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा खोला था। उन्होंने कलकत्ता के पास बैरकपुर परेड मैदान में रेजीमेंड के अफसर पर हमला कर उसे घायल कर दिया था। उन्हें ऐसा महसूस हुआ था कि यूरोपीय सैनिक भारतीय सैनिकों को मारने आ रहे हैं। उसके बाद उन्होंने ये कदम उठाया था। वे ईस्ट इंडिया कंपनी में सैनिक के तौर पर भर्ती हुए थे। लेकिन बाद में उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों के भारतीयों के ऊपर अत्याचार को देखकर अंग्रेजों के खिलाफ सिर उठाया था। मंगल पांडे का विद्रोह की तत्कालीन वजह अंग्रेज अधिकारियों द्वारा भारतीय सैनिकों पर अत्याचार तो हो ही रहा था। लेकिन हद तब हो गई। जब भारतीय सैनिकों को ऐसी बंदूक दी गई। जिसमें कारतूस भरने के लिए दांतों से काटकर खोलना पड़ता है। इस नई एनफील्ड बंदूक की नली में बारूद को भरकर कारतूस डालना पड़ता था। वह कारतूस जिसे दांत से काटना होता था उसके ऊपरी हिस्से पर चर्बी होती थी। उस समय भारतीय सैनिकों में अफवाह फैली थी कि कारतूस की चर्बी सुअर और गाय के मांस से बनाई गई है। ये बंदूकें 9 फरवरी 1857 को सेना को दी गई। इस्तेमाल के दौरान जब इसे मुंह लगाने के लिए कहा गया तो मंगल पांडे ने ऐसा करने से मना कर दिया था। उसके बाद अंग्रेज अधिकारी गुस्सा हो गए। फिर 29 मार्च 1857 को उन्हें सेना से निकालने, वर्दी और बंदूक वापस लेने का फरमान सुनाया गया। उसी दौरान अंग्रेज अफसर हेअरसेय उनकी तरफ बढ़े लेकिन मंगल पांडे ने भी उन पर हमला बोल दिया। उन्होंने साथियों से मदद करने को कहा लेकिन कोई आगे नहीं आया। फिर भी वे डटे रहे उन्होंने अंग्रेज अफसरों पर गोली चला दी। जब कोई भारतीय सैनिकों ने साथ नहीं दिया तो उन्होंने अपने ऊपर भी गोली चलाई। हालांकि वे सिर्फ घायल हुए। फिर अंग्रेज सैनिकों ने उन्हें पकड़ लिया। 6 अप्रैल 1857 को उनका कोर्ट मार्शल किया गया और 8 अप्रैल को उन्हें फांसी दे दी गई।

समस्त शैक्षिक संगठनों ने आजादी के अमृत महोत्सव को मनाने का लिया संकल्प

सीतापुर ब्यूरो अजय सिंह : राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ जनपद सीतापुर के द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के संबंध में पत्र देकर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी महोदय को अवगत कराया गया। जिला बेसिक शिक्षाअधिकारी ने कार्यक्रम को सफल बनाने का हरसंभव आश्वासन दिया। इस मौके पर राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के जिला अध्यक्ष एवं मंडल अध्यक्ष महेश मिश्रा, जिला मंत्री रामहेत मौर्य ,जिला संयुक्त मंत्री राजेश सिंह,कोषाध्यक्ष इंद्रसेन गौतम,जूनियर हाईस्कूल शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष सत्य प्रकाश मिश्रा, प्राथमिक शिक्षक संघ के जिला अध्यक्ष आदित्य प्रकाश मिश्रा, जूनियर हाईस्कूल शिक्षक संघ के जिला अध्यक्ष मुरारी लाल श्रीवास्तव,पूर्व माध्यमिक शिक्षक संघ के जिला अध्यक्ष रामचंद्र मिश्रा, महामंत्री इंद्र मोहन त्रिवेदी,बिसवा अध्यक्ष सतीश शुक्ला ,उत्तर प्रदेश

मृतक आश्रित कर्मचारी संघ के जिला अध्यक्ष चंद्रमोहन अवस्थीआदि सभी संघ आज एक मंच पर उपस्थिति हुए।एवं राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत होकरआजादी के अमृत महोत्सव को मनाने का संकल्प लिया।

सावन के पहले सोमवार को पांडेश्वर महादेव मंदिर तरसावां में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

सीतापुर ब्यूरो अजय सिंह : सावन मास के पहले सोमवार को ग्रामीण क्षेत्र में स्थित पांडेश्वर महादेव मंदिर तरसावां में हजारों की संख्या में शिवभक्त उमड़ पड़े और उन्होंने पूजा अर्चना के साथ शिवलिंग पर जलाभिषेक किया और भगवान शंकर की विधिवत आराधना कर परिवार एवं सभी की सुख समृद्धि की कामना की। शिवभक्तों ने जल, फल, फूल, दूध, दही, बेलपत्री आदि पूजा सामग्री चढ़ाकर शिवलिंग की पूजा अर्चना की। प्रथम सोमवार को शिव भक्तों ने उपवास भी रखा। मंदिर के पुजारी प्रभात त्रिपाठी ने बताया कि ये मन्दिर प्राचीन और कौरव पांडवों द्वारा रचित हैं। यहां आए हुए सभी श्रद्धालुओं की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। तरसावां निवासी राम प्रकाश मिश्रा ने बताया कि इस मंदिर का बहुत बड़ा महत्व है लेकिन मंदिर तक रास्ता नही है। कानपुर, लखनऊ,

हरदोई सहित दूर दराज से आने वाले श्रद्धालुओं को मंदिर तक आने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। लगभग 700 मीटर की दूरी पर वाहन खड़ा करके खेतों से निकलना पड़ता हैं। जन प्रतिनिधियों से रास्ते के लिए बात कई बार की गई लेकिन अभी तक रास्ता नही बन पाया।

अनियंत्रित होकर खाई में गिरी गाड़ी : कई लोग हुए घायल : एक व्यक्ति की मौके पर हुई मौत

सीतापुर ब्यूरो अजय सिंह : तंबौर से सीतापुर जा रही मारुति वैन गाड़ी नंबर न्द्32ज्ञ 1876 जिसमें लगभग 10 लोग सवार थे चौका पुल के पास अचानक पेड़ का जंघा गाड़ी के ऊपर गिर जाने से गाड़ी अनियंत्रित होकर खाई में गिर गई इसकी सूचना थाना सकरन को मिली व थाना तंबौर को सूचना मिली सूचना पाकर मौके पर पुलिस बल के साथ व राहगीरों के सहायता से एंबुलेंस तंबौर सीएससी पहुंचाया गया जिसमें राजेश तिवारी पुत्र रामा दल तिवारी उम्र लगभग 48 वर्ष की मौके पर मौत हो गई कृष्ण बिहारी पुत्र श्री भगवान ग्राम अचार्यजन पुरवा थाना तंबौर, आशुतोष पुत्र कृष्ण बिहारी आचार्य जन पुरवा थाना तंबौर ,प्रियंका पुत्री विनोद कुमार ,अगने पुत्र श्रीपाल ग्राम बडरिया थाना तंबौर, गुड्डू उर्फ बरकत अली पुत्र नजीर ग्राम पंडित पुरवा हरगांव ,मुकेश मिश्रा पुत्र धनेश कुमार इन घायलों को एंबुलेंस के माध्यम से सीतापुर जिला अस्पताल रेफर कर दिया है कुछ लोगों का इलाज निजी अस्पताल में चल रहा है।

पंपिंग सेट से सिंचाई करने पर नहीं लगा है रोक : किसान अपनी फसलों को बचाने के लिए पंपिंग सेट से कर सकते हैं सिंचाई– डीएम

गोरखपुर मण्डल प्रभारी आशुतोष चौधरी : गोरखपुर जनपद में बारिश नही हो रहा किसान हाल बेहाल होकर बोरिंग से सिंचाई कर रहे है लेकिन इस समय अफवाह भी फैली हैं कि बोरिंग से सिंचाई पर प्रशासन ने रोक लगा दिया है । लेकिन प्रशासन ने साफ कहा है कि यह शरारत है और यह किसी द्वारा फैलाई गई सिर्फ अफवाह हैं ट्यूबवेल या पंपिंग सेट से सिंचाई करने के लिए किसी प्रकार का रोक नहीं लगाया गया हैं। किसान अपनी बोरिंग या ट्यूबवेल से जरूरत के हिसाब से बेहिचक सिंचाई कर सकते हैं कोई रोक टोक नहीं है । कई साल बाद पहली बार ऐसा हुआ है कि जिले में धान की नर्सरी गिराने से लेकर रोपाई तक के लिए किसानों को पंपिंग सेट से सिंचाई करना पड़ रहा । खेत जुताई के समय ही कुछ जगहों पर हल्की बारिश हुई । बारिश नहीं होने से किसानों के धान की फसल खेत में ही सूख रही है । खेतों में दरारें तक पड़ गई हैं । धान की फसल को बचाने के लिए किसान अपने निजी , प्राइवेट बोरिंग या ट्यूबवेल से खेतों में सिंचाई कर रहे हैं । इस बीच जिले

में जल स्तर के गिरने व पंपिंग सेंट या ट्यूबवेल से सिंचाई से मना करने को लेकर अफवाह तेजी से फैली हैं । जिले का जल स्तर पहले की तरह बना हुआ है भूमिगत जल स्तर कम नहीं हुआ है । पंपिंग सेट से सिंचाई करने को लेकर कोई रोक नहीं लगाई गई है । जिलाधिकारी कृष्ण करुणेश ने बताया कि जिले में जल स्तर कम होने व पंपिंग सेंट से सिंचाई पर रोक लगाने का आदेश नहीं है । अफवाहों पर ध्यान ना दें और बेवजह पानी को बर्बाद ना करें जितना आवश्यकता हो उतना ही पानी उपयोग में लें।

गोरखपुर को मिलेंगी 12 इलेक्ट्रिक नई बसें : ग्रामीण क्षेत्रों से शहर में आना होगा आसान

गोरखपुर मण्डल प्रभारी आशुतोष चौधरी : मोतीराम अड्डा, महावीर छपरा और मिर्जापुर बाजार रुट पर भी अब इलेक्ट्रिक बसें संचालित होंगी। ग्रामीण क्षेत्रों में इलेक्ट्रिक बसों के संचालित होने से यात्रा अब और सुगम होगी। ग्रामीणों और जनप्रतिनिधियों की ओर से लगातार मांग को देखते हुए नगर निगम ने तीन नए रूटों पर इलेक्ट्रिक बस चलाने का निर्णय लिया है। सीएम योगी आदित्यनाथ कुछ दिनों में 12 इलेक्ट्रिक बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना कर सकते हैं। रूट नंबर 1: गोरखपुर –खोराबार–जंगल सिकरी– वनसप्ती– कड़जहां चौराहा– मोतीराम अड्डारूट नंबर 2: गोरखपुर –नौसढ़–एकला बाजार – सेंवई बाजार–महावीर छपरा रूट नंबर 3: गोरखपुर –देवरिया बाईपास –भगत चौराहा –चिड़ियाघर– सिक्टौर चौराहा– मिर्जापुर वर्तमान समय में गोरखपुर में देवरिया रूट रूट मेडिकल रूट मनीराम रूट सहजनवा रूट पर चल रही बसों से प्रतिदिन हजारों यात्री शहर में

आते हैं तथा कम पैसे में इलेक्ट्रिक बस से यात्रा करते हैं इलेक्ट्रिक बस काफी लोकप्रिय है तथा गर्मी के मौसम में एसी बसें यात्रियों को राहत प्रदान करते हैं बस उसके चल जाने से प्राइवेट टैक्सी टेंपो ई–रिक्शा वाहनों की आय में कमी आई है तथा इनकी मनमानी पर रोक लगी है।

अवैध संबंध के शक में पति ने पेचकस घोंपकर पत्नी की हत्या : लड़की के पिता ने लगाया दहेज हत्या का आरोप : मुकदमा दर्ज

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : सरायख्वाजा थाना क्षेत्र के रामपुर डेरवा गांव में सोमावर को रात एक सिरफिरे युवक ने पत्नी को पेचकस घोंप घोंपकर हत्या कर दी।महिला को एक सप्ताह पूर्व ऑपरेशन से बच्ची पैदा हुई थी।घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्ट के लिए भेजकर दहेज दहेज हत्या का मुकदमा पंजीकृत कर लिया है। सरायख्वाजा थाना क्षेत्र के जमालपुर गांव निवासी कालीचरण की बेटी सोनम का प्रेम विवाह 25 मार्च 2021 को पड़ोसी गांव रामपुर डेरवा गांव निवासी आकाश गौतम पुत्र राकेश गौतम के साथ हुआ था। विवाह के बाद से ही पति पत्नी के बीच परिवार में एक लोगों के अवैध संबंधों को लेकर अक्सर विवाद होता था। गांव वालों की माने तो आकाश अपने पिता पर ही शक करता था।जिसके लिए पत्नी की अक्सर पिटाई भी करता था। पिटाई की वजह से सोनम अक्सर अपने मायके चली जाती थी। बाद में मान मनौवल के बाद आकाश उसे लेकर आता था। यह सिलसिला शादी के बाद से ही चल रहा था। एक सप्ताह पूर्व सोनम को ऑपरेशन से बेटी पैदा हुई थी। जिसे वह अपनी बेटी भी नहीं मानता था। और इसके लिए दोनों के बीच नोकझोंक हो रही थी।इसी बीच आकाश ने पत्नी सोनम की पेचकस घोंप घोंपकर हत्या कर दी। विवाहिता के पिता ने परिवार के लोगों के खिलाफ दहेज हत्या की तहरीर दी। पुलिस ने मुकदमा पंजीकृत करते हुए एक को हिरासत में ले लिया। घटना के संबंध में मंगलवार को जानकारी देते हुए अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण शैलेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि रामपुर के डेरवा गांव में एक महिला की ससुराल में मौत हो गई है। 1 साल पहले उसकी शादी हुई थी मायके वालों ने ससुराल वालों के ऊपर दहेज हत्या का आरोप लगाते हुए तहरीर दी है। तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। साथ ही बताया कि एक हफ्ता पूर्व उसे एक बच्ची पैदा हुई थी जिसको लेकर आपस में विवाद चल रहा था कल उसके पति द्वारा उसे मारपीट हुई जिससे उसकी मौत हो गई पुलिस मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। आरोपी को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही की जा रही है।

अनीता मिश्रा को बनाया गया महिला प्रकोष्ठ का जिलाध्यक्ष

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : अनीता मिश्रा को आम आदमी पार्टी जौनपुर की महिला प्रकोष्ठ की जिला अध्यक्ष बनाया गया। अनीता मिश्रा को जनपद जौनपुर के महिला प्रकोष्ठ का जिला अध्यक्ष बनाए जाने पर आम आदमी पार्टी जौनपुर के कार्यकर्ताओं खुशी का माहौल गया जिसके पश्चात अनीता मिश्रा को आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं पदाधिकारियों एवं जनपद वासियों द्वारा शुभकामनाएं व बधाइयां दी जा रही हैं।आम आदमी पार्टी जौनपुर के जिला अध्यक्ष सूर्यनारायण सिंह मुन्ना ने कहा अनीता मिश्रा बहुत ही सरल स्वभाव की तेजतर्रार एवं कर्मठ महिला है और हमें पूर्ण विश्वास है कि इनके द्वारा जनपद जौनपुर में आम आदमी पार्टी के विचारों व कार्यों को जन–जन तक पूर्ण निष्ठा व ईमानदारी के साथ पहुंचाया जाएगा इसी के साथ सभी लोगों ने इनकी राजनीतिक भविष्य को उज्जवल होने की शुभकामनायें दिए।

देश की सारी सम्पत्तियां बेच रही सरकार : नजर अब गरीब की रोटी पर भी पड़ गयी है– कृष्णकांत पाण्डेय

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ। भारतीय जनता पार्टी की डबल इंजन सरकार की नजर अब गरीब की रोटी पर भी पड़ गयी है। देश की सारी सम्पत्तियां बेच रही सरकार की नजर से गरीब की रोटी भी नहीं बच पायेगी। किसानों, नौजवानों , छोटे व मंझले व्यापारियों, कमजोर वर्गों को तबाह करने के बाद अब दो जून की रोटी भी संकट के घेरे में है। उक्त वक्तव्य देते हुए कांग्रेस प्रवक्ता कृष्णकांत पाण्डेय ने आगे बताया कि जिस कार्य को पिछले 75 वर्षों में सरकारों ने नहीं किया, क्योंकि यह देश किसान प्रधान देश है। आज की मौजूदा सरकार जो ''हम दो हमारे दो'' के फार्मूले पर चल रही है उसने कर दिखाया। गरीब के शरीर से कपड़ा, पैर से चप्पल, तो पहले ही उतर चुका थी, बची थी तो पेट की रोटी उस पर भी आज से वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) लगाकर स्वंय इस सरकार ने साबित कर दिया कि गरीबों, किसानों, मजदूरों, तुम्हें जीने का कोई हक नहीं है। प्रवक्ता कृष्णकांत पाण्डेय ने आगे बताया कि आटा, चावल का आटा, गुड़, खांडसारी चीनी, चावल, राई, जौ, जई, शहद, पनीर, नारियल पानी, के साथ ही दही, लस्सी, छाछ, अब पूरी तरह से जीएसटी के दायरें में होंगे। पहली बार इन आवश्यक वस्तुओं जिसका उपयोग गरीब के घरों में जरूर होता है, उसे कर के दायरे में लाया गया है। अति तो तब हो गयी जब अस्पताल के कमरें भी जीएसटी के दायरें में आ गये तथा श्मसान घाट का काम करवाना भी महंगा हो गया। श्री पाण्डेय ने आगे कहा कि जहां चावल प्रति कुंतल 400 से 700 रुपये महंगा होगा वहीं आटा 200 से 250 रुपये तक महंगा होने की आशंका है। इसी तरह मैदा, सूजी,

दाल, पोहा, भी गरीब की रसोई से दूर रहेगा। केन्द्र सरकार ने ड्रायू लेगुमिनियस वेजीटेबलस शब्द के सहारे सूखी सब्जियां या उससे बने उत्पाद भी अब महंगे कर दिये। चिकित्सा क्षेत्र में आर्थोपेडिक उपकरण, शरीर के कृत्रिम अंग, सर्जिकल बेल्ट, के साथ ही बॉल पेन, स्याही, चम्मच, साइकिल पम्प, गहरे ट्यूबवेल टरबाइन पम्प, सबमर्सिबल पंप, आदि भी महंगे दर पर उपलब्ध होंगे। श्री पाण्डेय ने आगे कहा कि एक तरफ सरकार उद्योगपतियों का 11 लाख करोड़ रूपये का कर्ज माफ कर मित्रता निभा रही है, वहीं गिरता हुआ रूपया, बढ़ता कर्ज, गिरता विदेशी मुद्रा भंडार, पेट्रोंल, डीजल, गैस हद से ज्यादा महंगा, आवश्यक वस्तुएं आम आदमी की पहुंच से बाहर होती जा रहीं हैं, इस पर सरकार का ध्यान जरा भी नहीं है। सरकार जनता में आपसी टकराव, धर्म और संस्कृति के नाम पर बंटवारे की नाकाम कोशिश में लगी हुई है।

राजा श्री कृष्ण दत्त इंटर कालेज में नवागत प्रधानाचार्य डॉ संजय चौबे ने कार्य भार किया ग्रहण

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : जौनपुर जनपद के किसान आदर्श राष्ट्रीय इंटर कालेज प्रतापगंज, जौनपुर में एक लम्बे समय से प्रधानाचार्य पद का अनुभव प्राप्त डॉ संजय चौबे ने आज समारोह पूर्वक जौनपुर शहर के अति प्राचीन (स्थापित –1841ई.) के राजा श्री कृष्ण दत्त इंटर कॉलेज में स्थानांतरित हो कर पदभार ग्रहण किया। निवर्तमान प्रधानाचार्य डॉ प्रेमचंद जी ने इसी संस्था के पूर्व प्रधानाचार्य डॉ सत्यराम प्रजापति, अशोक इंटर कालेज के प्रधानाचार्य डॉ ओमप्रकाश शाही, राजा श्री कृष्ण दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य रहे एवं प्रबंध समिति के सदस्य कैप्टन (डॉ) अखिलेश्वर शुक्ला एवं प्राचार्य डॉ शम्भू राम सहित श्री अशोक कुमार तिवारी, डॉ अशोक कुमार मिश्र, डॉ रमेश चंद्र, डॉ विश्वनाथ, श्री गीतम सिंह, श्री रविप्रकाश सिंह, श्री ओमप्रकाश सिंह, डॉ बृजेश कुमार सिंह, श्रीयुत राजेश कुमार श्रीवास्तव, श्रवण कुमार तिवारी,सुवाषचंदृ मिश्र, राजकुमार सिंह, श्रीमती विंदो सिंह, श्रीमती रंजना चौरसिया, परमहंस, मुकेश कुमार सहित विद्यालय परिवार के सभी

सदस्यों की उपस्थिति में करतल ध्वनि के बीच कार्यभार सौंपा। सभी उपस्थित जनों ने फुल मालाओं से स्वागत किया। मंचासीन नवागत प्रधानाचार्य डॉ संजय चौबे, डॉ सत्यराम प्रजापति, डॉ प्रेमचंद, डॉ ओमप्रकाश शाही, डॉ शम्भू राम डॉ अखिलेश्वर शुक्ला ने अपने विचार व्यक्त करते हुए संस्था के उत्तरोत्तर विकास,परिसर में अनुशासन,पठन पाठन पर विशेष ध्यान देने पर जोर देते हुए डॉ संजय चौबे जी के एक लम्बे अनुभव का लाभ विद्यालय को अवश्य मिलेगा –ऐसी अपेक्षा की गई। उक्त कसौटियों पर खरा उतरने का डां चौबे ने पूर्ण विश्वास दिलाया। कार्यक्रम का संचालन डॉ ओझा ने तथा आभार व्यक्त डॉ प्रेमचंद जी ने किया। कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

लायन्स क्लब जौनपुर सूरज डिस्ट्रिक द्वारा किया गया बृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम

जौनपुर पत्रकार मनीष श्रीवास्तव : लायन्स क्लब जौनपुर सूरज डिस्ट्रिक–321 E के दृतीय चरण में पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिगत नगर के चौकियां स्थित धन्नेपुर चौराहा निकट 25 वृक्षों का वृक्षारोपण किया गया।

जिसमें आम, नेबू, आवला, सागौन, कदम, चितवन आदि अनेको वृक्ष लायन्स क्लब सूरज द्वारा लगाये गए। वृक्षारोपण किए गए सभी वृक्ष अपने समय पर यह वातावरण में आंक्सीजन की मात्रा बढ़ाने के साथ धरती के तापमान को भी कम करने में सहायक होंगें। लायन्स क्लब सूरज जौनपुर द्वारा वृक्षारोपण के कार्यक्रम में कुल 25 वृक्ष लगाए गए। उक्त अवसर पर अध्यक्ष आनन्द स्वरुप साहू, सचिव एमजेएफ विजय कृष्ण साहू, कोषाध्यक्ष विकास साहू, जोन चेयरपर्सन एमजेएफ सन्तोष साहू बच्चा, राजेन्द्र खत्री, अरुण सिंह, पूर्व अध्यक्ष नसीम अख्तर, सन्तोष मौर्या, अरविन्द जायसवाल, अमित साहू, ललित कुशवाहा, मनीष श्रीवास्तव, दशरथ मौर्या, एमजेएफ त्रिपुंड भास्कर, जितेन्दर जायसवाल मुख्य रूप से उपस्थित रहें।

धांधली की आशंका में पीएचडी संघर्ष मोर्चा ने अतुल सिंह के नेतृत्व में सौंपा कुलपति को ज्ञापन

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय में कुछ दिन पूर्व आयोजित पीएचडी प्रवेश परीक्षा के दौरान कुछ कमरों में प्रश्न पुस्तिका की सील टूटी हुई थी और कुछ अभ्यर्थियों के पास पहले से ही उसके उत्तर मौजूद थे इसकी शिकायत जब आसपास बैठे अभ्यर्थियों ने संबंधित कमरों में कि तो उन शिकायतों को कमरों में ही दबा दिया गया, और पकड़े गए अभ्यर्थियों पर कोई विधिक कार्यवाही नहीं हुई और शिकायत को भी बाहर नहीं आने दिया गया, पूर्व में पीएचडी संघर्ष मोर्चा बनाकर संघर्ष करने वाले और वर्तमान में पीएचडी प्रवेश परीक्षा में परीक्षार्थी रहे समाजसेवी अतुल सिंह और दिव्य प्रकाश सिंह ने इसकी शिकायत ज्ञापन के माध्यम से कुलपति से की इस मौके पर अतुल सिंह ने कहा कि परीक्षा के दौरान हमें लगा था कि शिकायत इन कमरों से बाहर निकल कुलपति जी के पास तक पहुंचेगी लेकिन दुर्भाग्यवश यह शिकायत कमरे तक ही सिमट कर रह गई, और हमेशा की तरह से मामले को दबा दिया गया इसलिए हम सभी ने निर्णय किया कि पूर्व की भांति हम सभी के साथ किसी भी प्रकार का धोखा न हो इसके लिए हमने एक ज्ञापन कुलपति महोदया को सौंपा है। जिसमे उनसे मांग की है कि संबंधित कमरों की सीसीटीवी रिकॉर्डिंग सुरक्षित रखी जाए और पुनर्निरीक्षण कर आवश्यक कार्रवाई की जाए, यदि हम सभी के साथ विश्वविद्यालय ने न्याय नहीं किया तो पीएचडी संघर्ष मोर्चा पूर्व से भी बड़ा आंदोलन खड़ा करेगी और जब तक न्याय नहीं मिलेगा तब तक संघर्ष से पीछे नहीं हटेगी और संघर्ष ऐसा होगा की विश्वविद्यालय के लिए नजीर बन

जाएगा, कुलपति महोदया से साफ शब्दों में बता दिया गया है की विश्वविद्यालय अपनी आदत से बाज आ जाए और अपनी व्यवस्थाओं में सुधार लाए। दिव्य प्रकाश सिंह ने कहा कि बार–बार विश्वविद्यालय के द्वारा किया जा रहा यह छल हम सभी के मनोस्थिति पर गहरा आघात है, दिन रात मेहनत करने वाले बार–बार विश्वविद्यालय की परीक्षाएं दे रहे हैं और जुगाड़ वाले पीएचडी प्रवेश परीक्षा क्वालीफाई कर जा रहे हैं, पूर्व में भी ऐसा हुआ और हम सभी ने जीतोड़ संघर्ष किया था और इस बार भी अपने पुराने इतिहास को विश्वविद्यालय दोहराने जा रहा है और हम सभी ने निर्णय किया है कि आखिरी सांस तक इस बार ऐसा होने नहीं दिया जाएगा, और इस बार अगर ऐसा हुआ तो संघर्ष मोर्चा के साथ साथ बड़ी संख्या में छात्र आमरण अनशन पर बैठने के लिए विवश होंगे। उपरोक्त अवसर पर चंद्रपाल सिंह, बेचन सोनकर, सोनू यादव, अभय राज, पंकज यादव, विवेक, नितिन आदि लोग सम्मिलित रहे।

आरोपी को साधारण कारावास व जेल में बितायी गयी अवधि के लिए जुर्माने से किया गया दण्डित

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : वादिनी मुकदमा नगीना देवी पत्नी गब्बर निषाद नि0 धर्मापुर, थाना गौराबादशाहपुर जनपद जौनपुर की लिखित तहरीर पर अभियुक्त किशन पुत्र स्व0 गोकुल निषाद नि0–धर्मापुर थाना गौराबादशाहपुर जनपद जौनपुर द्वारा कारित अपराध के सम्बन्ध में थाना गौराबादशाहपुर में दिनांक 14.08.20 समय 15.36 को मु0अ0सं0 148/20 धारा 342,452,354, भा0द0वि0 व 7/8 पाक्सो एक्ट पंजीकृत हुआ। अभियोग की विवेचना तत्परता से गुणवत्ता कायम रखते हुए पूर्ण की गयी तथा आरोपीगण के विरूद्ध आरोप पत्र माननीय न्यायालय में प्रेषित किया गया। श्रीमान् वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक महोदय जनपद जौनपुर द्वारा महिलाओं/बालकों के विरूद्ध हो रहे अपराधों पर कठोरता से नियंत्रण लगाने एवं अभियुक्तों को अधिकाधिक दण्डित कराने हेतु निर्देशित किया गया। श्रीमान् अपर पुलिस अधीक्षक नगर के कुशल नेतृत्व में उपर्युक्त अभियोग को जनपदीय पुलिस द्वारा सम्यक पैरवी एवं प्रभावी कार्यवाही करते हुए गवाहों का तत्परता से परीक्षण पूर्ण कराने के परिणामस्वरुप दिनांक 18.07.22 को माननीय न्यायालय अपर सत्र न्यायाधीश/विशेष न्यायाधीश, पाक्सो एक्ट(अनन्य) जौनपुर द्वारा आरोपी किशन पुत्र गोकुल निषाद उपर्युक्त को धारा 354 भा0द0वि0 में 01 वर्ष के साधारण कारावास व मु0–1000/–रूपये के जुर्माने से दण्डित किया गया, जुर्माना अदा न करने पर अभियुक्त को एक माह का अतिरिक्त साधारण कारावास भोगेगा। अभियुक्त को भारतीय दण्ड संहिता की धारा 342 में छः माह के साधारण कारावास व मु0–500/– रूपए के जुर्माने से दण्डित किया गयी, जुर्माना अदा न करने पर अभियुक्त पन्द्रह दिन का अतिरिक्त साधारण कारावास भोगेगा। अभियुक्त को पाक्सो एक्ट की धारा 7छ8 में भी जेल में बितायी गयी अवधि व मु01500/– रूपये के जुर्माने से दण्डित किया गया, अभियुक्त द्वारा जुर्माना न अदा करने पर एक माह पन्द्रह दिन का अतिरिक्त साधारण कारावास भोगेगा। सभी सजाएं साथ–साथ चलेंगी। पूर्व में जेल में बितायी गई अवधि इस सजा की अवधि में समायोजित की जायेगी।

मेधावी विद्यार्थियों को प्रधानाचार्य द्वारा माल्यार्पण एवं मिष्ठान पान कराकर किया गया सम्मानित

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ। लखनऊ मॉडल पब्लिक स्कूल फरीदी पुर मे आज दिनांक 18/07/2022 को कक्षा 10 आईसीएसई में शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम प्राप्त कर बेहतर प्रदर्शन करने के लिए मेधावी

विद्यार्थियों को प्रधानाचार्य श्रीमती गुन्जन खत्री द्वारा माल्यार्पण एवं मिष्ठान पान कराकर सम्मानित किया गया । प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र अरुण यादव का परीक्षा परिणाम 94% रहा, साथ ही मानसी पाल 88.40%, सचिन 87.60%, कुनाल जायसवाल 87%तथा पलक रावत 85.60% रहा। विद्यालय परिवार उनके उजजवल भविष्य की कामना करता है।

प्रेमी ने फांसी लगाकर की आत्महत्या तो प्रेमिका बगल में मृत पड़ी मिली

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : चंदवक थाना क्षेत्र के पड़रछा गांव में मंगलवार भोर में घर के बरामदे में रोशनदान से रस्सी के सहारे फांसी पर प्रेमी जहां लटकता मिला वहीं उसके पास ही चौकी पर प्रेमिका मृत पड़ी थीं।मृत महिला की मां ने अल सुबह यह दृश्य देखा तो उसके होश उड़ गए।शोर मचाई तो आस पास के लोग जुट गए।सूचना पुलिस को दी गईं।पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजकर आवश्यक कार्रवाई कर रही है। पड़रछा गांव निवासी फूलचंद्र विश्वकर्मा की पुत्री ज्योति की शादी दस साल पहले राकेश विश्वकर्मा निवासी बेलाव थाना बदलापुर के साथ हुई थीं।दोनों को एक बेटी आठ साल की साक्षी है।शादी के चार साल बाद दोनों के संबंध खराब हो गए।करीब एक साल पहले ज्योति का संबंध मोबाइल के जरिए राजस्थान के अलवर जिले के प्रतापगढ़ थानाक्षेत्र के निताता गांव निवासी विकास कुमार मीणा (26) से हो गया।इसकी भनक जब उसके पति को लगा तो विरोध करने लगा।मोबाइल से बात करने पर मारने पीटने लगा लेकिन वह नहीं मानी।करीब छः माह पहले वह घर से प्रेमी से मिलने अलवर चली गईं।इधर महिला की छोटी बहन प्रतीक्षा ने बदलापुर थाने में ज्योति को हत्या कर गायब कर देने का आरोप लगाते हुए रिपोर्ट दर्ज कराई।पुलिस ज्योति को अलवर से बरामद कर उसके पिता फूलचंद्र को सुपुर्द कर दिया।तब से वह मायके में ही रह रहीं थी।जीविकोपार्जन के लिए एक माह से पतरही में एक दुकान पर नौकरी भी कर रही थीं।दो तीन माह से पति से भी उसके संबंध अच्छे हो गए थे।उसका पति विगत शुक्रवार को उससे मिलने आया था और एक दिन रहकर शनिवार को गया।सोमवार को उसका प्रेमी भी अलवर से आ धमका।पतरही में उस दुकान पर भी गया जहां वह काम करती थीं।रात में प्रेमिका के घर प्रेमी कब आया किसी को पता नहीं।मायके में केवल उसकी मां व छोटी बहन ही रहती है।पिता वाराणसी रहते हैं।मंगलवार भोर में उसकी मां गीता देवी जगी तो देखा की युवक रस्सी के सहारे रोशनदान से फांसी पर लटका है वहीं ज्योति बगल में चौकी पर मृत पड़ी है।यह दृश्य देख उसके होश उड़ गए।शोर मचाई तो आस पास के लोग इकट्ठा हो गए।सूचना पुलिस को दी गईं।सूचना पर थानाध्यक्ष रमेश कुमार, पतरही चौकी इंचार्ज राम बहादुर यादव मौके पर तत्काल पहुंच गए। एस पी सिटी डा० संजय कुमार सीओ गौरव शर्मा ने भी घटना स्थल का निरीक्षण कर आवश्यक दिशा निर्देश दिया। प्रेमी युवक की पहचान आधारकार्ड के आधार पर हुईं। पुलिस ने प्रेमी के घर सूचना भेज दी है! इस संबंध में चंदवक थानाध्यक्ष रमेश कुमार ने बताया कि गांव द्वारा सूचना मिली मैं फोर्स के साथ मौके पर गए प्रेमी जो है फंदे लटका था वही प्रेमिका बगल में चौकी पर लेटी पड़ी थी दोनों की मृत्यु हो चुकी थी मौके का जांच पड़ताल किया गया शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया! प्रेमी के परिजनों को सूचना दे दी गई।

समाजवादी कुटिया का पहलवान अनुभव चौहान का मेजर ध्यान चन्द स्पोर्ट्स कालेज में चयन

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : मेजर ध्यान चन्द स्पोर्ट्स कालेज, सैफई में पहलवान अनुभव चौहान के नामांकन का सम्पूर्ण श्रेय उसके माता–पिता का है और उसकी मेहनत एवं लगनशीलता का है। समाजवादी कुटिया ने तो अनुभव चौहान के साथ केवल अपने दायित्व का निर्वाहन किया है और उस दायित्व का निर्वाहन किया है जो कुटिया की स्थापना का उद्देश्य था। उक्त बातें धर्मापुर क्षेत्र के मोहिउद्दीनपुर गांव स्थित समाजवादी कुटिया के संचालक ऋषि यादव ने अनुभव चौहान का नाम श्मेजर ध्यान चन्द स्पोर्ट्स कालेज, सैफईश में निशुल्क शिक्षा हेतु चयन होने की खुशी में कही। बता दें कि अनुभव चौहान समाजवादी कुटिया के सबसे कम उम्र के पहलवान हैं, जिन्हें कुटिया ने विगत अगस्त–2021 में गोद लिया था। चूंकि कुटिया के संस्थापक ऋषि यादव सपा के युवा कार्यकर्ता और समाजसेवी हैं। कोविड–19 महामारी के समय सपा सुप्रीमो की बातों से प्रेरित होकर ऋषि यादव मार्च–2020 से ही समाजवादी कुटिया की स्थापना करके नियमित निशुल्क शिक्षा, पौष्टिक मौसमी फलाहार और दूध देने का काम करते हैं। अब पहलवान अनुभव चौहान ,मेजर ध्यान चंद स्पोर्ट्स कॉलेज सैफई इटावा इंटरमीडिएट तक कि शिक्षा निःशुक प्राप्त करेंगे।

डॉ0 राम मोहन अस्थाना असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर हुए चयनित

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : सल्तनत बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय बदलापुर अर्थशास्त्र विभाग में प्रवक्ता पद पर कार्यरत डॉ0 राम मोहन अस्थाना का उच्चतर शिक्षा सेवा चयन आयोग, उत्तर प्रदेश , प्रयागराज के विज्ञापन संख्या 50 द्वारा असिस्टेंट प्रोफेसर अर्थशास्त्र पद पर चयन हुआ

है उनके सफलता की सूचना पाकर पूरे महाविद्यालय परिवार एवं क्षेत्र में हर्ष की लहर व्याप्त हो गई है डॉ0 राम मोहन अस्थाना अपने कर्तव्यनिष्ठ और ईमानदार व्यवहार के कारण तथा विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों यथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों, अनुशास्ता मंडल ,स्वास्थ्य एवं स्वछता,राष्ट्रीय सेवा योजना, एम.आई. काउन्सलर, के सुचारू रूप से संचालन के लिए जाने जाते हैं। महाविद्यालय के प्रबंधक विनोद कुमार सिंह एडवोकेट तथा प्राचार्य डॉ0सुनील प्रताप सिंह एवं पूर्व प्राचार्य डॉ0 ब्रजेंन्द्र सिंह डा0 धीरेंद्र पटेल डॉ0ओम प्रकाश दुबे डॉ0 रेखा मिश्रा डॉ0 अशेष उपाध्याय डॉ0प्रवीण सिंह महाविद्यालय परिवार तथा सल्तनत बहादुर इंटर कॉलेज के डॉ0विजय शंकर तिवारी कस्तूरी पुर ग्राम प्रधान जावेद अहमद ,बृजमोहन गुप्ता व क्षेत्र के गणमान्य लोगों ने डॉ0 अस्थाना को उनकी इस सफलता की ढेर सारी हार्दिक बधाई एवं शुभ कामना दिया।

मनरेगा मजदूरों का भुगतान बीसी सखी के माध्यम से कराएं – बीडियो

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : ब्लाक सभागार में मंगलवार को साप्ताहिक बैठक में खण्ड विकास अधिकारी शरद कुमार श्रीवास्तव ने पंचायत सचिवों को निर्देशित किया कि आप सब मनरेगा श्रमिकों का भुगतान बीसी सखी के माध्यम से कराना सुनिश्चित करें! इस कार्य में पंचायत सचिव, ग्राम प्रधान एवं रोजगार सेवक इस काम में बीसी सखी का सहयोग करें! खण्ड विकास अधिकारी ने पंचायत सचिवों को निर्देश दिया कि सभी गाँव पंचायत में बना सामुदायिक शौचालय नियमित खोला जाय और उसकी साफ – सफाई प्रति दिन कराते हुए शौचालय का प्रयोग करने वाले का रजिस्टर में नाम दर्ज करें! गाँव में संचारी रोग से जन जन के बचाव के लिए खण्ड विकास अधिकारी श्रीवास्तव ने निर्देशित किया कि नालियों की शत प्रतिशत साफ सफाई, जल निकासी के लिए नाली की साफ सफाई करते हुए लार्वा का छिड़काव व फागिंग कराएं! खण्ड विकास अधिकारी ने ग्राम सचिवालय की क्रियाशीलता की समीक्षा किया! उन्होंने पाया कि 95 ग्राम सचिवालय में 88 ग्राम सचिवालय सक्रिय हैं ! मौके पर सहायक विकास अधिकारी पंचायत रणजीत सिंह, अजय कन्नौजिया, संतोष दुबे, अवनीश, श्रीपति मौर्या, पूजा सोनी, निशा यादव , राकेश त्रिपाठी आदि लोग मौजूद थे!

पुलिस महानिदेशक फायर सर्विस के दिशा निर्देश पर सीएफओ अयोध्या राज किशोर राय ने किया जिले के शैक्षणिक संस्थानों का निरीक्षण

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) सूत्र के मुताबिक जिला अयोध्या में पुलिस महानिदेशक फायर सर्विस के निर्देशानुसार स्कीम न0–02 के अनुसार मुख्य अग्निशमन अधिकारी राज किशोर राय व प्रभारी अग्निशमन अधिकारी द्वारा अपने अधीनस्थ अग्निशमन विभाग के कर्मियों के साथ शैक्षिक संस्थानों के भवनों का अग्निसुरक्षा की दृष्टि से निरीक्षण किया।इस दौरान इन दोनों अधिकारियों ने वहां पर मौजूद शिक्षकों व छात्र छात्राओं को आग से कैसे बचें इससे बचाव हेतु जागरूक किया गया। इस दौरान इन दोनों अधिकारियों ने वहां पर मौजूद सभी लोगों को अपने कर्मियों के माध्यम से अग्निशमन यंत्र के माध्यम से विधिवत जानकारी दी गई।इन दोनों अधिकारियों ने जिले के आदर्श जूनियर हाई स्कूल रुदौली अयोध्या,प्राथमिक विद्यालय मथा नवादा जनपद अयोध्या, राम सेवक स्मारक इंटर कॉलेज अयोध्या,श्री राम लखन यादव हायर सेकेंड्री स्कूल अयोध्या,आर डी पब्लिक एजुकेशनल स्कूल अयोध्या,श्री हंस इंटर कॉलेज रुदौली अयोध्या, इच्छा राम महाविद्यालय डोभीआरा अयोध्या,सीतापति भगवती प्रसाद इंटर कॉलेज डोभी यारा अयोध्या, डॉक्टर लोहिया पीजी कॉलेज कुचेरा अयोध्या,प्रतिमा चिल्ड्रन एकेडमी मंगारी बीकापुर अयोध्या,भानुमति इंटर कॉलेज लालपुरा नए पूरा अयोध्या,उज्जवल आईएएस कोचिंग संस्थान नाका अयोध्या,आशा क्लासेज

गुरु नानक गली अयोध्या विक्रम क्लासेज हमदानी कोठीअयोध्या सहित अन्य शिक्षण संस्थानों पर जाकर वहां पर मौजूद शिक्षकों व छात्र छात्राओं को आग से कैसे बचें इस पर अपने अधीनस्थ अग्निशमन विभाग के कर्मियों की सहायता से विधिवत जानकारी देते हुए सराहनीय कार्य किया। इस मौके पर मिल्कीपुर अग्निशमन द्वितीय अधिकारी नीतेश शुक्ल, रुदौली अग्निशमन द्वितीय अधिकारी सुधीर यादव, हृदय नाथ विश्वकर्मा, सुनील तिवारी,राम प्रसाद पाण्डेय सहित अन्य अग्निशमन विभाग के कर्मी मौजूद रहे।

25 वी अंतर वाहिनी प्रतियोगिता का पदक अलंकरण समारोह मुख्य अतिथि डीआईजी वाराणसी व आयोजन समिति सचिव डाक्टर मिश्र आईपीएस की उपस्थिति में सम्पन्न

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या)34 वी वाहिनी पीएसी बटालियन बटालियन मीडिया सेल के मुताबिक 34वीं वाहिनी पीएसी, वाराणसी में 14 जुलाई से से प्रारंभ हुई 25वीं अंतर वाहिनी तैराकी एवं क्रास कंट्री प्रतियोगिता–2022 का भव्य समापन बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के तरणताल पर मुख्य अतिथि अजय कुमार सिंह पुलिस उपमहानिरीक्षक, वाराणसी अनुभाग द्वारा आयोजन सचिव डॉ राजीव नारायण मिश्र, आईपीएस, सेनानायक, 34वीं वाहिनी पीएसी, वाराणसी की उपस्थिति में किया गया।चार दिवसीय प्रतियोगिता में पीएसी पूर्वी जोन की विभिन्न 10 वाहिनियों के 235 खिलाड़ियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। इस समारोह के प्रारंभ में मुख्य अतिथि द्वारा, पूर्वी जोन के जोनल टीम मैनेजर्स से परिचय प्राप्त किया गया। वही श्नीट आफ मार्शल द्वारा समस्त टीमों को ग्राउण्ड से मार्च पास्ट बैण्ड की मधुर धुन पर, उत्कृष्ट टर्नआउट के साथ प्रतियोगिताएं संपन्न हुई। टीमों के मार्च पास्ट द्वारा दिये गये अभिवादन को मुख्य अतिथि द्वारा सलामी मंच से स्वीकार किया गया। इस मौके पर प्रतिभागियों के इस अच्छे प्रदर्शन का दर्शकों द्वारा बीच बीच में ताली बजाकर स्वागत किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि द्वारा सलामी मंच से इस प्रतियोगिता के समापन की घोषणा की गयी व समारोह के दौरान डॉ राजीव नारायण मिश्र, ने प्रतिभागियों के खेल भावनाओं की प्रशंसा करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथि पुलिस उप महानिरीक्षक वाराणसी अनुभाग अजय कुमार सिंह एवं आयोजन सचिवध्सेना नायक डॉ राजीव नारायण मिश्र ने विजेता खिलाड़ियों व विजयी टीमों को शील्ड, ट्रॉफी

एवं अन्य पुरस्कार प्रदान किये गये। वही इसी कड़ी में चार दिवसीय प्रतियोगिताओं में क्रॉस कंट्री एवं डाइविंग प्रतियोगिताओं में 34 वी वाहिनी पीएसी ने प्रथम स्थान प्राप्त कर शील्ड हासिल की। पीएसी पूर्वी जोन तैराकी प्रतियोगिता में 42वीं वाहिनी पीएसी प्रयागराज ने 131 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान, 12वीं वाहिनी पीएसी फतेहपुर ने 82 अंक प्राप्त कर द्वितीय स्थान तथा 34वी वाहिनी पीएसी वाराणसी ने 54 अंक प्राप्त कर तृतीय स्थान प्राप्त किया। वाटर पोलो प्रतियोगिता का फाइनल मैच 34वीं वाहिनी पीएसी वाराणसी एवं 12वीं वाहिनी पीएसी फतेहपुर के बीच खेला गया, जिसमें 12वीं वाहिनी पीएसी फतेहपुर ने छह गोल कर प्रथम स्थान एवं 34 वाहिनी पीएसी वाराणसी ने एक गोल कर द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा क्रास कंट्री प्रतियोगिता के सतीश कुमार, 37वीं वाहिनी पीएसी कानपुर ने 33 मिनट 26 सेकंड में 12 किलोमीटर की रेस पूरी कर प्रथम स्थान, बीसवीं वाहिनी आजमगढ के अश्विनी कुमार ने 35 मिनट 36 सेकंड में रेस पूरी कर द्वितीय स्थान एवं 36वी वाहिनी पीएसी रामनगर के रत्नेश कुमार यादव ने 40 मिनट 5 सेकंड में अपनी रेस पूरी कर तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस समापन समारोह के दौरान देवपाल, शिविरपाल, रणजीत तिवारी, सूबेदार मेजर, अधिकारी/कर्मचारी, बड़ी संख्या में खेल प्रेमी व आमंत्रित अतिथिगण उपस्थित रहे।

सरकार ने प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम योजना के अन्तर्गत रू0 50 हजार से 50 लाख तक के प्रोजेक्ट स्थापना हेतु सुनहरा अवसर किया प्रदान

अयोध्या।(सरवन कुमार नगर संवाददाता) प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम योजना के अन्तर्गत रू0 50 हजार से 50 लाख तक के प्रोजेक्ट स्थापना हेतु सुनहरा अवसर प्रदान किया जा रहा है। जनपद के शहरीध्ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम योजना में अधिकतम् रू0 50 लाख एवं सेवा क्षेत्र में अधिकतम् रू0 20 लाख तक के प्रोजेक्ट स्वीकृत किये जायेंगे। यह योजना शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र दोनो के लिए मान्य है। इस योजना में सामान्य जाति के पुरूष लाभार्थी को परियोजना लागत का 10 प्रतिशत स्वयं का अंशदान एवं आरक्षित वर्ग जैसे महिलाओं तथा अन्य पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक, भूतपूर्व सैनिक एवं विकलांग को 5 प्रतिशत स्वयं का अंशदान लगाना होता है तथा शेष 90 प्रतिशत व 95 प्रतिशत बैंक ऋण का प्राविधान है। कुल परियोजना लागत पर शहरी क्षेत्र में सामान्य जाति के पुरूष लाभार्थी को परियोजना लागत का 15 प्रतिशत एवं ग्रामीण क्षेत्र में 25 प्रतिशत अनुदान प्राप्त होगा तथा आरक्षित वर्ग को शहरी क्षेत्र में 25 प्रतिशत धनराशि अनुदान (छूट) एवं ग्रामीण क्षेत्र में 35 प्रतिशत अनुदान उद्योग स्थापित करने पर अनुमन्य है। इस योजना में ग्रामीण क्षेत्र में उद्योग लगाने पर पं० दीन दयाल ग्रामोद्योग रोजगार योजना के अन्तर्गत 03 वर्षों तक ब्याज की छूट भी देने का प्राविधान है। ऐसे बेरोजगार व्यक्ति जिनकी आयु 18 वर्ष पूर्ण हो चुकी हो, शहरीध्ग्रामीण क्षेत्र के निवासी हों तथा न्यूनतम् शैक्षिक योग्यता कक्षा 8 पास हों वे अपना आधार कार्ड, पैन कार्ड, शैक्षित योग्यता, जाति प्रमाण पत्र, जनसंख्या एवं अनापत्ति प्रमाण पत्र, फोटो, राशन कार्डध्परिवार रजिस्टर की नकल के साथ विभागीय वेबसाइट चउमहचम चवतजंस पर जाकर एजेन्सी झटप्ठ पर ऑनलाइन करें किसी प्रकार की असुविधा होने की स्थिति में किसी भी कार्यदिवस में कार्यालय उ0प्र0 खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड, सत्यवती सदन, निकट बड़ी देवकाली मन्दिर, वेनीगंज रोड, अयोध्या में सम्पर्क करें। उक्त जानकारी जिला ग्रामोद्योग अधिकारी अशोक कुमार शर्मा ने दी है।

आजादी के 75 में वर्ष में तमाम खाद्य वस्तु पर पहली बार टैक्स लगाए जाना जनविरोधी है–गंगा सिंह यादव

अयोध्या।(सरवन कुमार नगर संवाददाता)समाजवादी पार्टी के निवर्तमान जिला अध्यक्ष गंगा सिंह यादव ने आजादी के 75 में वर्ष में तमाम खाद्य वस्तु पर पहली बार टैक्स लगाए जाने को जनविरोधी बताया है श्री यादव ने कहा कि पहली बार है जब आम गरीब आदमी के उपयोग में आने वाले आटा चावल दूध दही जैसी वस्तुओं पर टैक्स लगाया जा रहा है खुले रुप में बिकने वाले अनाज अब जीएसटी के दायरे में आएंगे श्री यादव ने कहा कि समाजवादी नेता डॉ राम मनोहर लोहिया ने कपड़ा रोटी सस्ती हो दवा पढ़ाई मुक्ति हो का सपना देखा था जिस पर समाजवादी जब–जब सत्ता में आए इस पर काम भी किया लेकिन अब भाजपा की डबल इंजन की सरकार ने अनाज कपड़ा सहित अन्य वस्तुओं पर जो अभी तक टैक्स फ्री हुआ करती थी इन्हें भी जीएसटी के दायरे में लाकर महंगाई से जूझ रहे जनता को एक और महंगाई की मार दिया है श्री यादव ने कहा कि एक तरफ भाजपा आजादी का अमृत काल मना रही है दूसरी तरफ जनता की दुश्वारियां बढ़ा रही है डॉ राम मनोहर लोहिया के नाम से सपा शासनकाल में लखनऊ में बने लोहिया अस्पताल और संस्थान में पचे की कीमत ध100 करने के साथ ही सारी जांच इलाज मुक्त सुविधा समाप्त कर दी है श्री यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में जनता तराय तराय कर रही है बेरोजगारी भ्रष्टाचार महंगाई रोज नई ऊंचाइयों पर पहुंच रही है।

सूत्र के मुताबिक अवसाद से ग्रस्त मेडिकल एजेंसी मालिक पहले सरयू में कूदे : फिर ट्रेन से कटकर दी जान

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) रविवार को अयोध्या कैंट रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर 3 पर एक शव की पहचान सोमवार को हो गई। सूत्र के मुताबिक मृतक आलोक तिवारी निवासी कौशलपुरी कॉलोनी के रहने वाले थेस वे काफी दिनों से अवसाद में चल रहे थेस घटना को लेकर दवा कारोबारियों में गहरा दुख हैसइस संबंध में सोमवार को मर्चरी पहुंचे बेटे ने शव की शिनाख्त की।इसके बाद राजकीय रेलवे पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया है।रविवार की सुबह अयोध्या कैंट रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर तीन पर खड़े एक 45 वर्षीय शख्स ने सुबह लगभग चार बजे ट्रैक पर छलांग लगा दी थीस मनकापुर की ओर से प्रयागराज जाने वाली सरयू एक्सप्रेस की चपेट में आकर उसकी मौत हो गई थी।रेलवे ट्रैक पर उसका शव की टुकड़ों में कटा मिला था। इस मामले की सूचना पर मौके पर पहुँची जीआरपी ने शव को कब्जे में लेकर शिनाख्त कराने का प्रयास किया था लेकिन सफलता नहीं मिल पाई थी।जिसके चलते जीआरपी पुलिस ने शव को शिनाख्त के लिए मर्चरी में रखवा दिया था।शहर के कौशलपुरी कालोनी के फेज वन स्थित मकान नंबर एमआईजी 16 निवासी असीम तिवारी ने मोर्चरी पहुंच मृतक की शिनाख्त अपने पिता 45 वर्षीय आलोक तिवारी पुत्र शिव मंगल प्रसाद तिवारी के रूप में की। इस संबंध मे बताया कि उनके पिता शहर के अलका टावर में दवा का कारोबार करते थे और टावर में उनकी वेस्टर्न मेडिकल एजेंसी के नाम से प्रतिष्ठान है।जीआरपी अयोध्या कैंट के प्रभारी निरीक्षक अरविन्द कुमार तिवारी ने बताया कि मौत की वजह जाने के

लिए पुलिस को पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इन्तजार है। प्राथमिक जांच–पड़ताल में आत्महत्या किये जाने की बात सामने आई है। इस मामले में बताया जाता है कि अयोधय कैंट रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर तीन पर सरयू एक्सप्रेस से कटकर जान देने वाले दवा कारोबारी 45 वर्षीय आलोक तिवारी पिछले काफी दिनों से मानसिक अवसाद में थे।यह मानसिक अवसाद पारिवारिक कारणों से था। वही स्थानीय लोगों का कहना है कि इसी कारण को लेकर उनकी पत्नी भी मानसिक अवसाद का शिकार चल रही हैं। दवा कारोबारी आलोक तिवारी ने शनिवार को रामनगरी अयोध्या में सरयू में कूदकर आत्महत्या करने की कोशिश की थी,लेकिन उस समय घाट पर मौजूद नाविकों,गोताखोरों तथा जल पुलिस के जवानों ने उनको सकुशल बचा लिया था।

संदिग्ध परिस्थितियों में हुई 24 वर्षीय युवक की मौत : परिवार वालों ने लगाया हत्या किए जाने का आरोप

अयोध्या।(डाक्टर अजय तिवारी जिला संवाददाता) जिले के इनायत नगर थाना क्षेत्र के अंतर्गत 24 वर्षीय युवक की सरिया के सहारे फांसी लगाकर मौत के मामले में जहां इनायत नगर पुलिस आत्महत्या मानकर मामले को रफा–दफा करने पर लगी है वहां परिजनों हत्या किए जाने का आरोप लगा कर मुकदमा पंजीकृत करवाने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा रहे हैं मिली जानकारी के अनुसार इनायतनगर थाना क्षेत्र के परसवाँ पूरे बहरेलियन पुरवा निवासी रामखदेरू का 24 वर्षीय पुत्र विजय बहादुर की दिवाल से निकली 4 सूत की सरिया के सहारे गले में फंदा डाला हुआ मृत अवस्था में लाश मिली लाश जिस प्रकार टंगी थी ऐसा मालूम पड़ता था कि कहीं से ला कर लाश को सरिया के सहारे बांध दिया गया मृतक के पिता के अनुसार हमारे लड़के को पहले 2:00 बजे रात्रि 17 जुलाई 2022 को फोन कर बुलाया गया उसके बाद हत्या कर आत्महत्या का रूप देने के लिए सरिया के सहारे लटका दिया गया व 2.15 पर मृतक के फोन पर फोन पर बुलाया गया सुबह 5रू00 बजे मृतक जिस घर में सरिया के सहारे लड़का था उसके परिवार वाले मृतक के परिजनों को सूचित किया आपका लड़का फांसी लगा लिया है।यह सूचना मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया घटना की सूचना हमने पुलिस को दिया पुलिस ने लाश को उतरवाकर पोस्टमार्टम हेतु भेज दिया तब से हम पुलिस को हत्या किए जाने का प्रार्थना पत्र दिया परंतु आत्महत्या मान कर पुलिस रिपोर्ट दर्ज नहीं कर रही है।मृतक के पिता के अनुसार हत्या पुलिस पुलिस के अनुसार आत्महत्या यह एक सोचनीय प्रश्न है विजय बहादुर जिंदगी समाप्त करना चाहता था तो जगन्नाथ का घर क्यों चुना अन्य कोई स्थान बाग क्यों नहीं दूसरी बात यह है कि मृतक का मोबाइल जगन्नाथ के घर पर निवाड़ के पलंग पर कैसे गई है तीसरी बात यह सरिया से लटक कर आत्महत्या किया करीब 10 फुट ऊंचाई ऐसी दशा में मृतक किस वस्तु के सहारे चढ़कर गले में फंदा लगाया यदि किसी सीढ़ी के सहारे फंदा लगाया तो पुलिस के पहुंचने के पहले सीढ़ी या कोई अन्य सामान कहां गया यह एक जांच का विषय है दूसरी बात यदि मृतक के मोबाइल की कॉल डिटेल निकाली जाए तो आखिरी बात करने वाले से समस्त राज खुल सकता है मृतक की लाश देखकर एक बच्चा भी बता सकता है कि विजय बहादुर की छत पर मारकर आत्महत्या का रूप देने के लिए छत पर से ही गले में फंदा लगाकर लटका दिया गया।

उत्तर प्रदेश सरकार के सेवायोजन विभाग द्वारा नाम से सेवामित्र पोर्टल व मोबाइल ऐप विकसित किया–मण्डलायुक्त

अयोध्या।(डाक्टर अजय तिवारी जिला संवाददाता) मण्डलायुक्त नवदीप रिणवा ने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार के सेवायोजन विभाग द्वारा नाम से सेवामित्र पोर्टल/मोबाइल ऐप विकसित किया गया है, जिसके माध्यम से सर्विस प्रोवाइडर (सेवा प्रदाता) एवं सेवामित्रों (कुशल कामगार) द्वारा मण्डल के समस्त शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों तथा शासकीय कार्यालयों में स्थानीय स्तर पर विभिन्न प्रकार की सेवाये जैसे इलेक्ट्रीशियन, कारपेन्टर, प्लम्बर, ए0सी0 सर्विस मैकेनिक, टैक्सी सर्विस, रंगाई पुताई आदि उपलब्ध करायी जा रही है। सेवामित्र पोर्टलध्ऐप को प्राथमिकता प्रदान करते हुये मण्डल के समस्त जिलाधिकारियों से अपेक्षा की है कि जनपद के समस्त सरकारी कार्यालयों में मैनेजमेंट सम्बंधी कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर सेवामित्र पोर्टल के माध्यम से कराने के लिए कार्यालयाध्यक्ष/ विभागाध्यक्ष को निर्देशित करें। उन्होंने कहा कि यदि जनपद में किसी मेन्टेनेंस कार्य से सम्बंधित सेवाप्रदाता सेवा मित्र पोर्टल पर उपलब्ध नही है तो ऐसे प्रदाताओं को भी सेवामित्र पोर्टल पर आनबोर्ड करायें, जिससे स्थानीय स्तर पर कुशल कामगारों को रोजगार उपलब्ध हो सकें।मण्डलायुक्त ने कहा कि नागरिकों को सेवायें प्रदान करने के लिए एक पोर्टल sewamitra.up.gov.in (सेवामित्र पोर्टल), मोबाइल ऐप तथा काल सेन्टर के टोल फ्री नम्बर 155330 को विकसित की गयी व्यवस्था में सेवा का परिचालन सकुशल कामगार अर्थात सेवामित्र व उपभोक्ता के मध्य सीधे न होकर पोर्टल पर पंजीकृत सेवाप्रदाताओं के माध्यम से किया जायेगा। सेवा प्रदाताओं का चयन एक विशिष्ट व्यवस्था के अधीन किया जायेगा। सेवाप्रदाताओं को पोर्टल पर पंजीकरण के उपरांत उनके द्वारा जनपदों में व उनमें प्रदान की जाने वाली सेवाओं का चयन किया जायेगा। सेवाप्रदाता के माध्यम से नागरिकों/उपभोक्ताओं को प्रदान की जाने सेवायें व सम्बंधित उपसेवायें शुल्क आधारित होंगी जिसका सेवाप्रदाता द्वारा निर्धारण तथा अंकन पोर्टल पर किया जायेगा। किसी उपभोक्ता द्वारा सेवा का शुल्क एवं सेवाप्रदाता की रेटिंग के पोर्टलध्ऐप पर अवलोकन तथा काल सेन्टर से वार्ता के उपरांत सेवा बुक की जा सकेगी। उपभोक्ता द्वारा करायी गयी सेवा को बुक किये गये सेवाप्रदाता द्वारा सेवामित्र के माध्यम से उपलब्ध कराया जायेगा तथा सेवा पूर्ण होने के उपरांत सेवामित्र द्वारा निर्धारित शुल्क उपभोक्ता से प्राप्त किया जायेगा। इसी प्रकार उपभोक्ताओं द्वारा प्रोजेक्ट वर्क की सेवाएं भी सेवामित्र पोर्टलध्ऐपध्काल सेन्टर के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है।

एकमात्र सहारा था शारदा सहायक नहर का पानी : अब उसमें भी जल बहाव हुआ कम : किसान दर–दर ठोकरें खाने को मजबूर

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) किसानों को जहां धान की नर्सरी डाले हुए 40 से 45 दिन पूरे हो रहे हैं, वही अब किसानों के मंसूबे पर पानी फेर रहा है किसान निराश है, किसान अपने आप को ठगा महसूस कर रहा है जैसे मानो कि उसका सब कुछ लुट गया हो बरसात की मार किसानों के ऊपर ऐसी पड़ी है कि वह बिल्कुल से टूट गया है सरकार के द्वारा चलाए गए सिंचाई की संसाधन ही किसानों का एकमात्र धान की रोपाई का अब सहारा रह गया है वही शारदा सहायक नहर में पानी का जल स्तर इतना कम हो गया है कि किसानो को नहर से लगे नालियों से सिंचाई कर पाना बड़ा मुश्किल है चाहे यह कहे कि दैवीय आपदा के साथ–साथ सरकारी संसाधन भी किसानों को ठेंगा दिखाने का काम कर रहे हैं। इस संबंध में किसानों से जब बात की गई तो किसानों ने बताया कि हमारी धान की नर्सरी अब बर्बाद होने के करीब है एकमात्र सहारा नहर का पानी था अब उसमें भी पानी घट गया है हम लोगों की धान की रोपाई नहीं हो पाएगी हम लोग बर्बाद हो जाएंगे नहर से संबंधित अधिकारी कर्मचारी हम किसानों की पीड़ा को ध्यान नहीं दे रहे हैं अगर हम किसानों की तरफ ध्यान न दिया गया तो हमारा समूह धरने पर बैठने को मजबूर होगा सोशल मीडिया के माध्यम से हम सभी किसान साथी अधिकारी, कर्मचारियों से अपने हक की मांग कर रहा हूं जहां सरकार के द्वारा किसानों के हित में तरह–तरह की योजनाएं चलाई जा रही हैं वहीं कुछ हमारे कर्मचारी अधिकारी हम किसानों पर मेहरबान नहीं हो रहे हैं।जब इस संबंध में नहर के बड़े अधिकारियों से बात की गई तो उन्होंने कहा कि बहुत जल्द ही जल की आपूर्ति कराई जाएगी।

बार एसोसिएशन में सभी पदों के लिए अंतिम दिन भी नामांकन प्रक्रिया सकुशल संपन्न

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) फैजाबाद बार एसोसिएशन की चुनाव की प्रक्रिया शुक्रवार से शुरू हो गई फैजाबाद बार एसोसिएशन के रिटर्निंग ऑफिसर एवं निवर्तमान अध्यक्ष सुशील कुमार चौबे और एल्डर्स कमेटी के चेयरमैन श्रवण कुमार मिश्रा से मिली जानकारी के अनुसार 18 जुलाई तक नामांकन प्रक्रिया चलती रहेगी। और आगामी 19 जुलाई को नामांकन पत्रों की जांच होगी। इसके बाद 20 जुलाई को पर्चा वापसी की प्रक्रिया संपन्न कराई जाएगी। और आगामी 28 जुलाई को मतदान प्रक्रिया कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच संपन्न होगी। इसके बाद 29 जुलाई को परिणाम आने के बाद नई कार्यकारिणी का गठन होगा। वही नामांकन के अंतिम दिन संयुक्त मंत्री विवेक कुमार श्रीवास्तव ने भी नामांकन किया और बताएं कि संयुक्त मंत्री का पद बहुत जिम्मेदारी का पद है अगर जीत हासिल तो पुस्तकालय का प्रभार दिया जाता है। और हमारा पुस्तकालय आदर्श पुस्तकालय बने।वही बार एसोसिएशन के कार्यकारिणी ठ के लिए राम किशोर यादव ने नामांकन किया। और कहा कि मेरी प्रथम वरीयता अधिवक्ता साथियो के सम्मान के लिए होगी।जो मुझे कार्य दिया जाएगा उसका मैं निर्वहन करुगा।तो वही वरिष्ठ अधिवक्ता कालिका प्रसाद मिश्रा ने भी बार एसोसिएशन के अध्यक्ष पद के लिये नामांकन किया और बताया कि जीत हासिल होने पर मेरा अभियान उसी दिन से शुरू हो जायेगा।हमारी 365 दिन प्राथमिकताएं होंगी और सकुशल संपन्न कराई जाएंगी। तो वही पारसनाथ पांडेय ने बार एसोसिएशन संघ के अध्यक्ष पद के लिए नामांकन किया और बताया कि मेरी प्राथमिकता अधिवक्ता भाइयों के सम्मान और सुरक्षा की जिम्मेदारी मेरी है उन्हें प्राथमिकताओं के साथ चुनाव लड़ रहा हूं।और अधिवक्ता के सम्मान में हर तरह की लड़ाई लडूंगा और किसी तरह की कोई कोताही नहीं करूंगा।वही महामंत्री पद के लिये जायसवाल ने बार एसोसिएशन संघ के लिये नामांकन किया और कहा कि हमारी कचेहरी में साफ सफाई अच्छी व्यवस्था हो बहुत गंदगी है। न्यायालय में सीनियर अधिवक्ताओ के बैठने की व्यवस्था नही कुर्सियों की बहुत कमी है।कुछ कुर्सियो है जिसको वादकारी व सिपाही कब्जा कर लेते है जिससे सीनियर वकीलों को काफी दिक्कत होती और खड़े रहना पड़ता है।ये सारी समस्यओं का समाधान किया जायेगा।आखिरी दिन अध्यक्ष पद के लिए इंद्र प्रताप सिंह उर्फ लल्ला ने भी नामांकन किया। तो देवकी नंदन त्रिपाठी ने भी उपाध्यक्ष पद के लिए नामांकन किया और अपनी प्राथमिकताएं बताएं की अधिवक्ता भाइयो के सुख दुख में सदैव खड़े है और खड़े रहेंगे।तो वही वरिष्ठ अधिवक्ता सिंह ने भी अध्यक्ष पद के लिए नामांनक किया और कहा कि मेरी पहली प्राथमिकता है ज.वै.. की व्यवस्था करेगे और आवश्यकता पड़ने पर चार्टर्ड अकाउंटेंट की भी व्यवस्था करेंगे अधिवक्ता भाइयो के पुस्तकालय के लिए ध5000 प्रतिवर्ष शासन द्वारा सहायता दी जा रही है अभी वह बार काउंसिल के खाते में जाता है यहां के जूनियर को जोड़ने का काम करेंगे और उनका खाता खुल जाए जिस अधिवक्ता भाई इसका लाभ ले सके और कचहरी के विकास के लिए निरंतर कार्य करता रहूंगा और कचहरी में वाईफाई की व्यवस्था पर ध्यान दूंगा और कचहरी परिसर को साफ सुथरा करने का भी प्रयास करूंगा।

प्रदेश के हर जिले में जल्द मिलेगी मुफ्त डायलिसिस की सुविधा – वृजेश पाठक

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) किडनी के मरीजों को अब उनके जिले में ही डायलिसिस की सुविधा मिलेगी।प्रदेश सरकार सभी जिलों में डायलिसिस की सुविधा शुरू कर रही है। अभी 66 जिलों में डायलिसिस यूनिट का संचालन हो रहा है। मार्च 2022 तक प्रदेश के 56 जिलों में डायलिसिस की सुविधा थी। जो अब बढ़ गई है। बाकी नौ जिलों में एक माह के भीतर डायलिसिस की सुविधा बढ़ेगी। मुफ्त हो रही डायलिसिस, किडनी के मरीजों को मुफ्त डायलिसिस की सुविधा मुहैया कराने की मुहीम तेजी से आगे बढ़ रही है। सरकारी जिला स्तरीय अस्पतालों में पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) मॉडल पर डायलिसिस यूनिट विकसित की जा रही है। अभी प्रदेश के 66 जिलों में 67 डायलिसिस यूनिट का संचालन हो रहा है। प्रत्येक यूनिट में छह डायलिसिस की मशीने लगी हैं। स्वास्थ्य महानिदेशालय में संयुक्त निदेशक मेडिकल केयर डॉ. वीके सिंह ने बताया कि मरीजों को मुफ्त डायलिसिस की सुविधा मुहैया कराई जा रही है। मरीजों के तीमारदारों की भागदौड़ होगी कम हो जायेगी वहीं मरीजों को दुश्वारियों से बचाने के लिए प्रत्येक जिले में डायलिसिस यूनिट का संचालन किया जा रहा है। प्रत्येक जिले में डायलिसिस यूनिट खुलने से मरीजों की भागदौड़ कम होगी। समय पर डायलिसिस हो सकेगी। इसका फर्क मरीजों की सेहत पर पड़ेगा। मरीजों का तनाव कम होगा। मरीजों को प्राइवेट अस्पतालों में डायलिसिस कराने की झंझट से भी छुटकारा मिलेगा। बाराबंकी, चित्रकूट, बहराइच, चंदौसी में जल्द ही डायलिसिस की सुविधा मरीजों को मिलेगी। इसके अलावा हाथरस, चंदौली, महौबा, औरेय्या और बदांयू में डायलिसिस यूनिट एक से दो माह में शुरू होने की उम्मीद है। मरीजों को बेहतर इलाज मुहैया कराने की दिशा में लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। किडनी की बीमारी का इलाज काफी महंगा है। मरीजों को मुफ्त डायलिसिस की सुविधा उपलब्ध कराने की दिशा में कोशिश की जा रही है। जल्द ही के बाकी नौ जिलों में डायलिसिस की मुफ्त सुविधा मिलेगी।

सम्पादक मंडल

पं. लाल साहब उपाध्याय (सत्यवेदानन्द जी), बाबा शक्ति नाथ (ज्योतिषाचार्य)श्री विजय कुमार तिवारी, श्री दीपचन्द्र मौर्य (एडवोकेट), श्री सुभाष चन्द्र सेठ,श्री ऋषिकेश द्विवेदी, श्री शिवशंकर तिवारी

प्रमुख कार्यालय– हिन्दी साप्ताहिक " देश की उपासना"

पता–ई 3464,राजाजी पुरम्(निकट मिनी स्टेडियम) लखनऊ उ0प्र0

लखनऊ सम्पादक– श्री पी0सी0श्रीवास्तव मों0 9415545107

स्वात्वाधिकारी की ओर से में0 प्रभुदयाल प्रकाशन के लिए श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव पत्नी श्री प्रभुदयाल श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक

श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव

सह सम्पादक

श्रीमती हेमा त्रिपाठी

मो0–7007415808,9628325542,9415034002

RNI संन्दर्भ संख्या – 24/234/2019/**R-1**

deshkiupasanadailynews@gmail.com

उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है,समाचार पत्र में प्रकाशित लेख/समाचारों से सम्पादक की सहमति अनिवार्य नही

समाचार–पत्र से सम्बन्धित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायलय होगा।